।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 128 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जनवरी– 2019 30/–प्रति

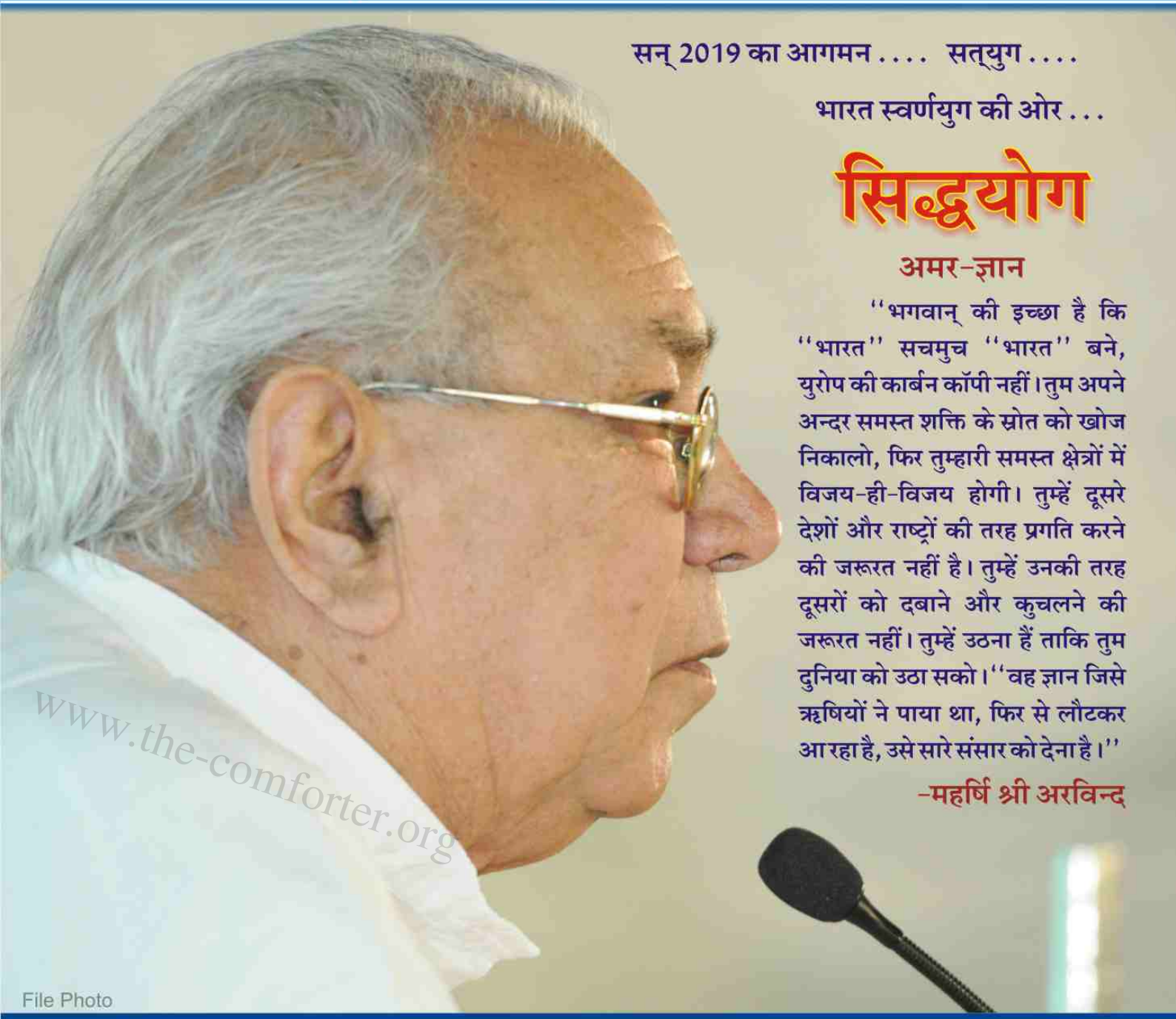

सन् 2019 का आगमन .... सत्युग ....

भारत स्वर्णयुग की ओर ...

सिद्धयोग

अमर–ज्ञान

''भगवान् की इच्छा है कि ''भारत'' सचमुच ''भारत'' बने, युरोप की कार्बन कॉपी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्रोत को खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय–ही–विजय होगी। तुम्हें दूसरे देशों और राष्ट्रों की तरह प्रगति करने की जरूरत नहीं है। तुम्हें उनकी तरह दूसरों को दबाने और कुचलने की जरूरत नहीं। तुम्हें उठना हैं ताकि तुम दुनिया को उठा सको।''वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से लौटकर आ रहा है, उसे सारे संसार को देना है।''

–महर्षि श्री अरविन्द

www.the-comforter.org

File Photo

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

www.the-comforter.org

अवतार का उद्देश्य

♦ श्री कृष्ण अतिमानस की संभावनाओं को उद्घाटित करते हैं, बुद्ध परे चरम् मुक्ति तक चले जाने का प्रयास करते हैं पर वह मुक्ति अभी अभावात्मक है, वह भावात्मक रूप से क्रमविकास को पूर्ण बनाने के लिये पृथ्वी पर वापस नहीं आते; इसका सुधार करते हैं-''कल्कि'' जो विरोधी आसुरिक शक्तियों का नाश करके पृथ्वी पर भगवान् का राज्य स्थापित करते हैं। विकास की यह प्रगति बरबस ध्यान आकर्षित करती है और इसे समझने में भूल की कोई गुंजायश नहीं।

-महर्षि श्री अरविन्द, 'श्री अरविन्द के पत्र भाग-1' पृष्ठ-472

♦ मैं समझता हूँ कि बहुत थोड़े से लोगों ने उन्हें (श्री कृष्ण को) अवतार के रूप में पहचाना था-निश्चय ही, सर्वसामान्य रूप से उन्हें बिल्कुल ही अवतार नहीं माना गया था। उन थोड़े से लोगों में से जो लोग उनके सबसे अधिक समीप थे, उन्होंने शायद इसका कोई विचार भी नहीं किया था-वास्तव में विदुर आदि जैसे बहुत कम, प्रमुख लोगों ने ही इस तरफ ध्यान दिया था।

♦ जो लोग कृष्ण के साथ थे, वे संपूर्ण रूप से देखने में, दूसरे मनुष्यों की तरह ही मनुष्य थे। उन्होंने आपस में वैसे ही बातचीत की और कार्य किया जैसे मनुष्य, मनुष्यों के साथ करते हैं। उनके ईर्द-गिर्द रहने वाले लोग उन्हें देवता नहीं समझते थे। स्वयं कृष्ण को भी अधिकांश लोग मनुष्य ही जानते थे-केवल थोड़े से लोग ही उन्हें भगवान् के रूप में पूजते थे।

♦ मोटे रूप में कहें तो अवतार वह हैं, जो अपने अंदर जन्म ग्रहण किये हुए या अपने अंदर अवतरित हुए तथा भीतर से अपने संकल्प, जीवन और कर्म को संचालित करते हुए, भगवान् की उपस्थिति और शक्ति के विषय में सचेतन होता है; वह अपने भीतर इस भागवत उपस्थिति और शक्ति के साथ तादात्म्य अनुभव करता है।

-महर्षि श्री अरविन्द, 'श्री अरविन्द के पत्र भाग-1' पृष्ठ-477

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

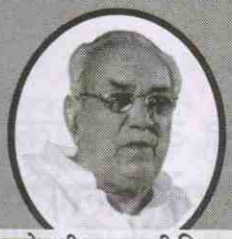

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

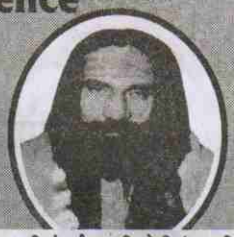

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 128 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जनवरी – 2019

वार्षिक 300/- ❁ द्विवार्षिक : 600/- ❁ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- ❁ मूल्य 30/-

❖

संस्थापक एवं संरक्षक :

पूज्य सद्गुरुदेव

श्री रामलालजी सियाग

(ब्रह्मलीन)

❖

सम्पादक :

रामूराम चौधरी

कार्यालय :

Spiritual Science

पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,

होटल लेरिया के पास,

चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :

spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra

Near Hotel Leriya,

Chopasani, JODHPUR (Raj.)

INDIA - 342 003

☎ +91 0291-2753699

Mob. : +91 9784742595

e-mail :

avsk@the-comforter.org

Website :

www.the-comforter.org

अनुक्रम

आध्यात्मिक शक्ति और राजसिक वेग....4

परमसत्ता की प्राप्ति का पथ (सम्पादकीय)....5

संजीवनी मंत्र....6

अहिंसा परमोधर्म....7

सद्गुरुदेव का प्रवचन....8

Religious Revolution in the World....9

ध्यान....10

हृदय मंथन....11

योग के बारे में....12

योग के आधार....13

योगियों की आत्मकथा....14

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध....15

मनुष्य और विकास....16

सिद्धयोग....17

भारत का स्वर्ण युग....18

चित्र पृष्ठ....19–23

अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....24–27

अवतार की संभावना और हेतु....28

दिव्य प्रेम....29

मेरे गुरुदेव....30

मिशन हेतु गुरु–शिष्य संवाद....31

चोरी की चोरी....32

भारत के उत्थान में योग शक्ति....33

गुरु की प्रसन्नता....35

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....36

शेष पृष्ठ सम्पादकीय....37

ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक शक्ति और राजसिक वेग

''जोश और उत्साह अच्छी वस्तुएँ हैं तथा अत्यन्त आवश्यक भी, किन्तु आध्यात्मिक स्थिति तीव्रता और शांति दोनों को मिलाती है। चैत्य अग्नि एक भिन्न वस्तु है-यहाँ तुम जिसकी बात कर रहे हो वह आयाम, उग्र आत्मरक्षा, न्याय अधिकारों का प्रयोग आदि करने की राजसिक प्राणगत अग्नि है।

मैं अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ। मेरे अन्दर ठोस शक्ति अवश्य है, किन्तु मेरे अन्दर उस आग की मात्रा अधिक नहीं है जो न्यायोचित अधिकारों को न देने वाले व्यक्ति के प्रति भड़क उठती है। फिर भी मैं अपने को दुर्बल या निर्जीव नहीं अनुभव करता। मैंने सदा ही अपना यह नियम रखा है कि किसी भी रूप में क्षुब्ध (क्रोधित) नहीं होऊँगा, क्षुब्धता का वर्जन करूँगा-फिर भी आवश्यकता पड़ने पर, मैं अपने ठोस बल का प्रयोग करने में सफल हुआ हूँ। तुम इस तरह बातें करते हो मानो राजसिक बल और उत्साह ही एकमात्र शक्ति हो तथा शेष सब निर्जीवता एवं दुर्बलता ही हो।

परन्तु असल में बात ऐसी नहीं है-**शांत आध्यात्मिक शक्ति सैंकड़ों गुना अधिक बलवान होती है।** यह भड़कने और फिर ठण्डी पड़ जाने वाली शक्ति नहीं है-बल्कि स्थिर, अचल तथा निरन्तर क्रियाशील शक्ति है।

संदर्भ-महर्षि श्री अरविन्द
'अपने विषय में' पुस्तक पृष्ठ-222-23

''सद्गुरुदेव सियाग की सिद्धयोग आराधना में-'मंत्र जप' व 'ध्यान' द्वारा साधक आध्यात्मिक नीरवता और शांति प्राप्त कर सकता है। इसलिए असीम शांति और अलौकिक आनंदमय जीवन के लिए सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान ही एकमात्र पथ है। निरन्तर आराधना से साधक में आध्यात्मिक शक्ति का संचरण होता है। वह आत्मिक बल में बलवान, शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत हो जाता है।''

www.the-comforter.org

सम्पादकीय ....

"परमसत्ता की प्राप्ति का पथ"

नूतन वर्ष 2019 के आगमन पर समस्त पाठकवृन्द को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह नूतन वर्ष विश्व के लिए एक नई ऊर्जा का संचार करें, अद्भुत शक्ति का एहसास संपूर्ण मानव जाति को हो, आराधनाशील साधक अपने पथ पर आगे बढ़ें, यही सद्गुरुदेव भगवान् से प्रार्थना है।

मनुष्य परमपद तक कैसे पहुँचता है, इस संबंध में श्री अरविन्द ने अवतार के आगमन के संबंध में कहा है-

"अवतार का आगमन मानव प्रकृति में भागवत प्रकृति को प्रकटाने के लिये होता है।" कृष्ण की भगवत्ता को प्रकटाने के लिए, जिससे मानव-प्रकृति अपने सिद्धांत, विचार, अनुभव, कर्म और सत्ता को ईसा और कृष्ण के सांचे में ढालकर स्वयं भागवत प्रकृति में रूपांतरित हो जाय।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने अपनी दिव्य लेखनी से लिखा है कि **'मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता'** क्या है? इस संबंध में विस्तार से लिखा है-

"हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ बारम्बार कहते हैं, अपने आपको पहचानो। **मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, यह जाने बिना प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असम्भव है।** हमारे धर्म का मूल मंत्र तो **'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और तद्रूप बन जाना है।** एक मात्र हमारा वैदिक धर्म ही है, जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति संभव है।

इसी संदर्भ में महर्षि अरविन्द ने भी कहा है। **"हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है, उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। मैंने उन सब का पालन करना, आरम्भ कर दिया है, एक मास के अन्दर ही अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है,** जिन-जिन चिह्नों की बात कही गई हैं, मैं उन सब की उपलब्धि कर रहा हूँ, हमारे धर्म के पातंजलि आदि सभी ऋषियों ने कहा है, अगम लोक तक सारा ब्रह्माण्ड हमारे अन्दर है।

"अन्तर्मुखी आराधना के बिना उस परम सत्ता का साक्षात्कार असम्भव है। परन्तु उस पथ पर चलने के लिए **'चेतन पुरुष'** का पथ प्रदर्शन और सहारा नितान्त आवश्यक है।" इसके अभाव में यह यात्रा पूर्ण रूप से असम्भव है। केवल उपदेश कर्म काण्ड, शब्द जाल, प्रदर्शन, तर्कशास्त्र, और अन्ध विश्वास तो अन्धेरे में भटकाने में सहयोगी हैं। किसी भी सत्य की खोज में यह बहिर्मुखी आराधना पूर्ण रूप से असफल हैं। यही कारण है, आज संसार के आम लोगों का विश्वास धर्म से उठ गया है। धार्मिक ढ़ोंग से अधिक परेशान होकर लोगों ने विद्रोही रूप तक धारण कर लिया है। **उस परम सत्ता का प्रकाश प्रथम व्यक्ति में होना बहुत कठिन है।** एक दीपक के जलने के बाद तो उससे संसार भर में असंख्य दीपक जलाकर उसे परमसत्ता के प्रकाश से पूरे संसार को जग मगाया जा सकता है। वह प्रथम थर्मल पॉवर हाऊस ही चालू करना कठिन है। मैं इस कार्य को केवल मात्र मानवीय प्रयास से सम्भव नहीं मानता। **इस कार्य को सम्पन्न होने में जन्म जन्मान्तरों के कर्मफल, सीधी ईश्वर कृपा और चेतन संत सद्गुरु का आशीर्वाद जरूरी है। दूसरे शब्दों में यह कार्य ईश्वर की स्वयं की शक्ति से ही संभव है। और किसी भी प्रकार यह कार्य संभव नहीं।**

हर युग में उसीपरम सत्ता ने स्वयं अवतरित होकर संसार से अन्धकार को भगाया है। महर्षि अरविन्द को भी अलीपुर जेल में सीधा आदेश देकर पथ-प्रदर्शन किया था। *श्री अरविन्द ने उस परम सत्ता के साक्षात्कार के सम्बन्ध में लिखा है:-*

"मैं अपने निज के लिए कुछ भी नहीं कर रहा हूँ क्योंकि मुझे अपने लिये न मोक्ष की आवश्यकता है, न अतिमानसिक सिद्धि की। यहाँ मैं इस सिद्धि के लिये जो यत्न कर रहा हूँ, वह केवल इस लिये कि पार्थिव चेतना में इस काम का होना आवश्यक है और यदि यह पहले मेरे अन्दर न हुआ तो औरों में भी न हो सकेगा।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट होता है कि प्रथम चेतना ही कठिन है। उस परम सत्ता की चेतना का सीधा अर्थ होता है, उस परम शक्ति का अवतरण। मैं पहले ही स्पष्ट कह चुका हूँ कि मेरे अन्दर जो परिवर्तन आया **और आज मेरे माध्यम से जो कुछ करवाया जा रहा है, उसमें मेरा स्वयं का रत्ती भर भी प्रयास नहीं रहा है।** इस प्रकार मैं देख रहा हूँ, मेरी तनिक भी इच्छा नहीं थी, फिर भी उस परमसत्ता ने मुझे माध्यम बनाकर अपनी मर्जी से चलाना प्रारम्भ कर दिया। जो थोड़ी कमी थी, **वह कार्य मेरे संत सद्गुरु जो कि उस परमसत्ता के अवतार थे,** के आशीर्वाद से पूर्ण कर दिया। इस प्रकार मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि मेरे माध्यम से जो शक्ति प्रकट हो रही है, वह ईश्वर कृपा और मेरे संत सद्गुरुदेव के आशीर्वाद का फल है। **शुद्ध ज्ञान के क्षेत्र ब्रह्मलोक और सहस्रदलकंवल तक का आरोहण मेरे अनेक जन्मों की आराधना का फल हैं, परन्तु सत् लोक, अलख लोक और अगम लोक का आरोहण गुरु कृपा के बिना असम्भव था।**

'नाम अमल' या 'नाम खुमारी' का आनन्द अगम लोक से आता है। अतः मेरे माध्यम से जो सच्ची शान्ति और

शेष पृष्ठ 37 पर...

www.the-comforter.org

संजीवनी मंत्र
Sanjeewani Mantra

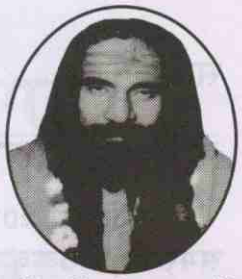

''जब एक महान् जनसमुदाय धूल में से उठ खड़ा होता है तो कौन-सा मंत्र संजीवनी मंत्र है, अथवा उसे पुनर्जीवित करनेवाली कौनसी शक्ति है? भारत में दो महामंत्र हैं-एक तो 'वंदे मातरम्' का मंत्र है जो मातृभूमि के प्रति जनता के जाग्रत प्रेम की सार्वभौम पुकार है और दूसरा और अधिक गुप्त और रहस्यपूर्ण है, जो अभी उद्घाटित नहीं हुआ है।''

संदर्भ-श्री अरविन्द, 19 फरवरी 1908 'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक के पृष्ठ-37 पर

When a great people rises from the dust, what 'Mantra' is the 'Sanjeewani Mantra' or what power is the resurrecting force of its resurgence? In India there are two great **'Mantra'**, the Mantra of **'Bande Mataram'** which is the public and universal cry of awakened Love to Mother-land, and there is another more **secret** and **mystic** which is not yet revealed.

Sri Aurobindo, 19 Feb 1908, Book—India's Re-birth, Page-37

''हमने 'वंदे मातरम्' मंत्र का प्रयोग अपने सारे हृदय और आत्मा से किया, और जब तक हमने उसका उपयोग किया और उसे जिया, सभी कठिनाईयों को पार करने के लिए उसकी शक्ति पर निर्भर रहे, हम उन्नति करते गये। पर अचानक हमारे विश्वास और साहस ने हमें धोखा दे दिया, मंत्र की पुकार डूबने लगी और जैसे-जैसे उसकी गूँज कमजोर पड़ने लगी, शक्ति देश से तिरोहित होने लगी। ईश्वर ने ही उसे मंद किया और डगमगा दिया क्योंकि वह अपना काम कर चुका था। 'वंदे मातरम्' से और अधिक महान् मंत्र आने को है। बंकिमचन्द्र चटर्जी भारतीय जागृति के अंतिम दृष्टा नहीं थे। उन्होंने केवल प्राथमिक और सार्वजनिक पूजा को शब्द दिये न कि आंतरिक गुप्त उपासना का सूत्र और अनुष्ठान। क्योंकि सबसे महान् वे मंत्र हैं जो भीतर ही उच्चरित किये जाते हैं और जिन्हें द्रष्टा अपने शिष्यों को स्वप्न अथवा संकल्पना में धीरे से कान में सुनाता है। जब उस अंतिम मंत्र का अभ्यास दो या तीन व्यक्ति भी करेंगे तो ईश्वर का हाथ खुलना प्रारंभ होगा; जब उपासना का अनुसरण बहुत लोग करेंगे तो बंद हाथ बिल्कुल खुल जाएगा।''

श्री अरविन्द, अगस्त 1920, 'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक, पृष्ठ-164

We used the Mantra **"Bande Mataram"** with our heart and soul, and so

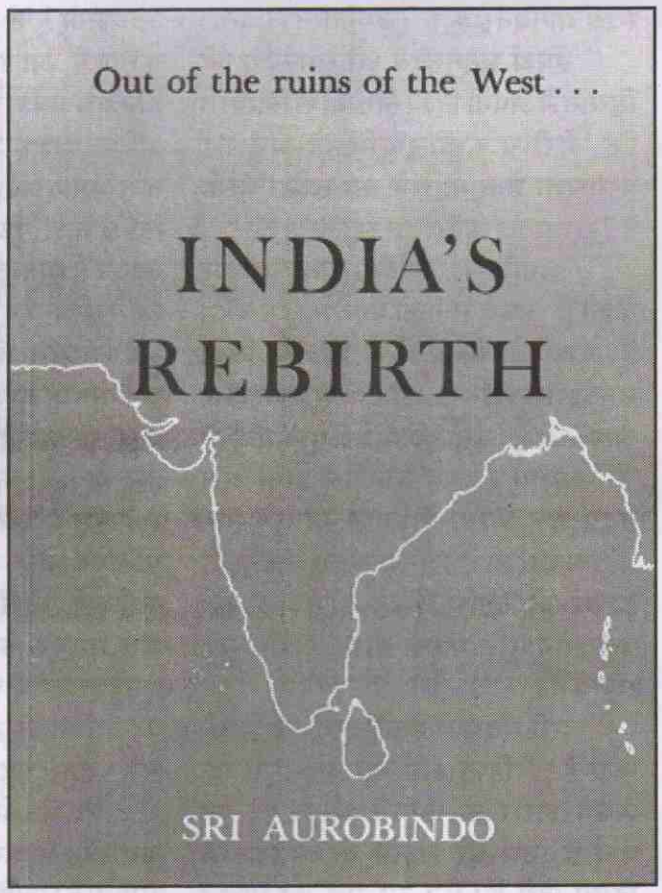

www.the-comforter.org

long as we used and lived it, relied upon its strength ot overbear all difficulties, we prospered. But suddenly the faith and the courage failed us, the cry of the Mantra began to sink and as it rang feebly, the strength began to fade out of the country. It was God, who made it fade out and falter, for it had done its work. A greater Mantra than Bande Mataram has to come. Bankimchandra Chattarji was not the ultimate seer fo Indian awakening. He gave only the term of the initial and public worship, not the formula and the ritual of the inner secret upasana (worship). For the Greatest Mantras are those which are uttered within, and which the seer whispers or gives in dream or vision to his disciples. When the ultimate Mantra is practiced even by two or three, then the closed Hand of God will begin to open; when the upasana is numberously followed the closed Hand will open absolutely."

–Sri Aurobindo, Aug.1920, Book from "India's Rebirth, Page 154

(अब वह संजीवनी मंत्र उद्घाटित हो गया है-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा में सामूहिक रूप से दिया जाने वाला दिव्य संजीवनी मंत्र) ❖❖❖

www.the-comforter.org

'अहिंसा परमोधर्म'

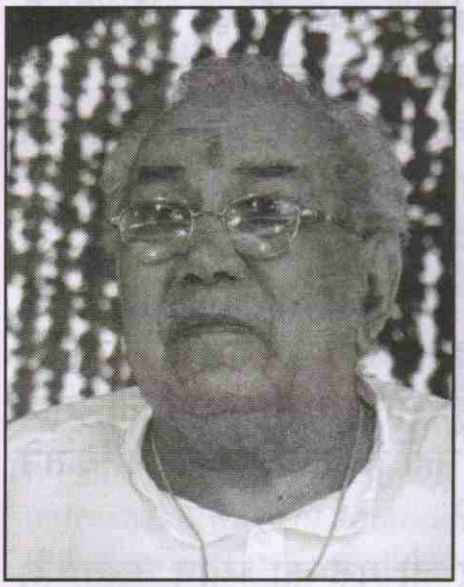

एक मात्र हिंदु धर्म है जो 'अहिंसा परमोधर्म' की बात करता है, केवल मात्र हिन्दू ही ! मानव मात्र के कल्याण की बात करता हैं, विश्व शांति की बात करता है। विश्व शाँति की बात और भी धर्मों वाले लोग करते हैं- हाइड्रोजन बम से। हम उस डर से नहीं करते हैं, हम अपने विकास की बात करते हैं तो विश्व के लोग ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं। West (पश्चिम) से भी कई पत्र आते-जाते रहते हैं। अब ये रोग क्यों खत्म (ठीक) हो रहे हैं, उनको बड़े असमंजस की बात लग रही हैं, बड़ी दुविधा में फँसे हुए है कि "धर्म" ही रोग का नाश कर दे तो फिर "विज्ञान" क्या करेगा?

वास्तव में धर्म क्या है? लोग समझते ही नहीं।

हमारी संस्कृति और पश्चिम की संस्कृति में रात-दिन का अंतर हैं। हमारी भाषा जितनी परिष्कृत हैं, पश्चिम में उसके लिए कोई मूल (Proper) शब्द नहीं हैं। अब धर्म को उन्होंने Religion कर दिया Religion तो बदल देते हैं परन्तु धर्म को बदल ही नहीं सकते, वो तो धारण करने की चीज हैं। धन के लालच में कुछ लोग धर्म को बदल रहे हैं, मगर धर्म तो बदला ही नहीं जा सकता, Religion बदला जा सकता है तो आज जो यहाँ हो रहा है, कोई साधारण घटना नहीं हो रही है। ये वैदिक दर्शन का अंतिम और पूर्ण विकास है।

-सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का प्रवचन
गुरु पूर्णिमा महोत्सव-2002

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

हठयोग और सिद्धयोग

अब दो प्रकार से ये योग चल रहा है-एक तो नाथ सम्प्रदाय के संन्यासी वो श्वांस पर जोर देते हैं, वो हठयोगी कहलाते हैं। श्वांस को अन्दर खींच कर रोक लेते हैं। जब तक श्वांस रुका रहता है तो मन स्थिर रहता है, मगर ज्यों ही श्वांस चला कि मन चलायमान हो जाता है, उन नाथों की पार नहीं पड़ रही है। इसमें (सिद्धयोग में) गुरु मन को रोकता है "गुरु क्या है? ये शरीर गुरु नहीं हो सकता, गुरु तो अजर-अमर है, अनादि-अनन्त है। ये (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ब्रह्मलीन) नाथजी थे उनकी कृपा हो गई इसलिए ये परिवर्तन आ रहा है। गुरु तो वो थे मुझे तो आदेश है बाँटने का, बाँट रहा हूँ।

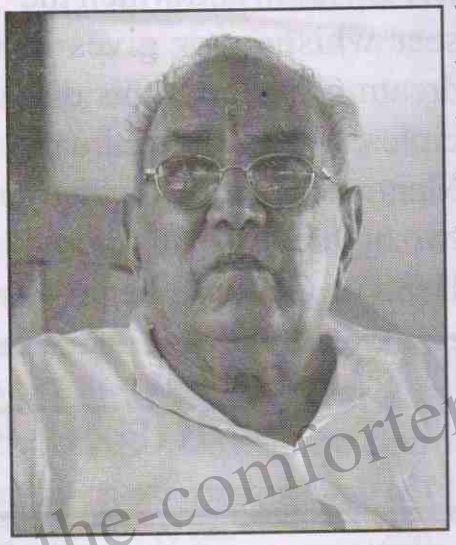

आपकी तरह गृहस्थी व्यक्ति हूँ और एक व्यवस्था चल रही है कि मेरे को ऊपर बिठा दिया, आप नीचे बैठ गए तो मैं महान् नहीं हो गया और आप छोटे नहीं हो गए। ये तो एक व्यवस्था शुरु से चली आ रही है। जो परिवर्तन मुझमें आया वो मानवमात्र में आएगा। मनुष्य-'मनुष्य' है। मैंने लाखों को ये परिवर्तन मूर्तरूप से करवाकर बता दिया। 'गुरु' में गुरुत्वाकर्षण होता है इसलिए गुरु का यहाँ (आज्ञाचक्र पर) ध्यान करवाया जाता है। अगर गुरु में गुरुत्वाकर्षण है तो मन रुक जाएगा और नहीं तो यदि प्रोफेसनल (व्यावसायिक) है तो फिर जीवन भर आँख बन्द किए बैठे रहो, गुरु को भेंट चढाते रहो, कुछ नहीं होना है।

मैं तो कह देता हूँ, दूसरा गुरु बदल लो। गुरु, रोक लगाता है मुझे यहाँ आकर पता लगा, दूसरा गुरु धारण करके पता नहीं क्या हो जाएगा, नरक में चला जाएगा द्रोह हो जाएगा? मैं तो मेरे शिष्यों को कहता हूँ-सौ गुरु और बना लो मुझे कोई परेशानी नहीं है।

दो विद्या है-अपरा और परा। अपरा विद्या में **पहली क्लास** से लेकर **एम.ए** तक कितने ही गुरु बदलते हैं, परा विद्या ये पैरासाईकोलॉजी है।

इसमें भी गुरुओं की स्टेजेज अलग-अलग है तो रोक लगाने वाली बात मेरे समझ में नहीं आती है। मैं तो नहीं लगाता। मैं तो कहता हूँ, सौ गुरु और बना लो, मुझे कोई परेशानी नहीं है। दतात्रेय जी ने कितने गुरु बनाए थे?

इस प्रकार जो गुरु का ध्यान करता है, नाम जप चल रहा है तो इससे आगे आपकी (साधक) ड्यूटी खत्म। अब बताने वाले ने जो बताया है, उसमें अगर सच्चाई है तो आगे का काम शुरु हो जाएगा और नहीं तो जीवन भर आँख बंद किये हुए बैठे रहो, कुछ नहीं होगा; यह दो प्रकार है-(हठयोग व सिद्धयोग)।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

Religious Revolution in the World

When **mantras** are directed to lower levels of consciousness they often end up as spells with destructive or protective powers. However, when they are used for reaching the higher planes of **consciousness,** they can take the practitioners to greater heights of spiritual awakening and **eventual freedom from the cycle of birth and death**.

The silent repetition of the mantra is called Naam Jap. After continuous chanting of the mantra for over a fortnight or a month, the disciple doesn't have to make an effort to chant; **the chanting happens automatically** on its own whether heèshe is awake or sleeping. This state is known as **Ajapa Jap** (roughly translated as involuntary chanting). When chanting of Mantra is accompanied by regular meditation, it slowly unleashes a wave of **Ananda** (**bliss**), which is so soothing that the disciple feels heèshe is on a high, and doesn't want to come out of it. Indian saints have described this state of Ananda as intoxication without drugs. The Ananda brought on by the Mantra and meditation is incomparable to the calming effect of any addictive drug because it doesn't depend on any external inducement and lasts forever. This is the reason why a disciple initiated into Siddha Yoga by Guru Siyag is freed from drug-addiction completely and irrevocably.

Given below is an excerpt from the book **Sri Aurobindo or The Adventure of Consciousness by Sri Aurobindo's disciple Satprem.** Guru Siyag often cites this section to explain the power of mantras:

"There exists in India a secret knowledge based on sounds and the differences of vibratory modes according to each plane of consciousness. If we pronounce the sound OM, for example, we clearly feel its vibrations envelop the head centers, while the sound RAM touches the navel center. And since each of our centers of consciousness is in direct contact with a plane, we can, by the repetition (japa) of certain sounds, make contact with the corresponding plane of consciousness. This is the basis of an entire spiritual discipline, known as "Tantric" because it derives from sacred texts called Tantra. The fundamental or essential sounds, which have the power to make contact, are called mantras. The mantras, always secret, and given to the disciple by his guru, are of all kinds (there is a multitude of degrees within each plane of consciousness), and may serve **the most contradictory purposes**. By combining certain sounds, one can at the lower levels of consciousness, generally the vital level, make contact with the corresponding forces and acquire quite strange powers: **there are mantras that can kill in five minutes (with violent vomiting), mantras that can strike with precision a particular part or organ of the body, mantras that can cure, mantras that can start a fire, or protect, or cast spells.**

This type of magic, '**Kundalini**', being an all-knowing energy force, is aware of which body part or organ is in acute need of healing or cleansing. So, the 'Kundalini' makes the practitioner perform 'Kriyas' that are specific to his needs. With this cleansing, the practitioner is cured of all kinds of chronic and even terminal diseases such as HIV, AIDS, cancer, arthritis etc., and genetic disorders like hemophilia, mental afflictions too are completely cured and stress is completely relieved.

Count. to Next Edition...

www.the-comforter.org

"ध्यान"

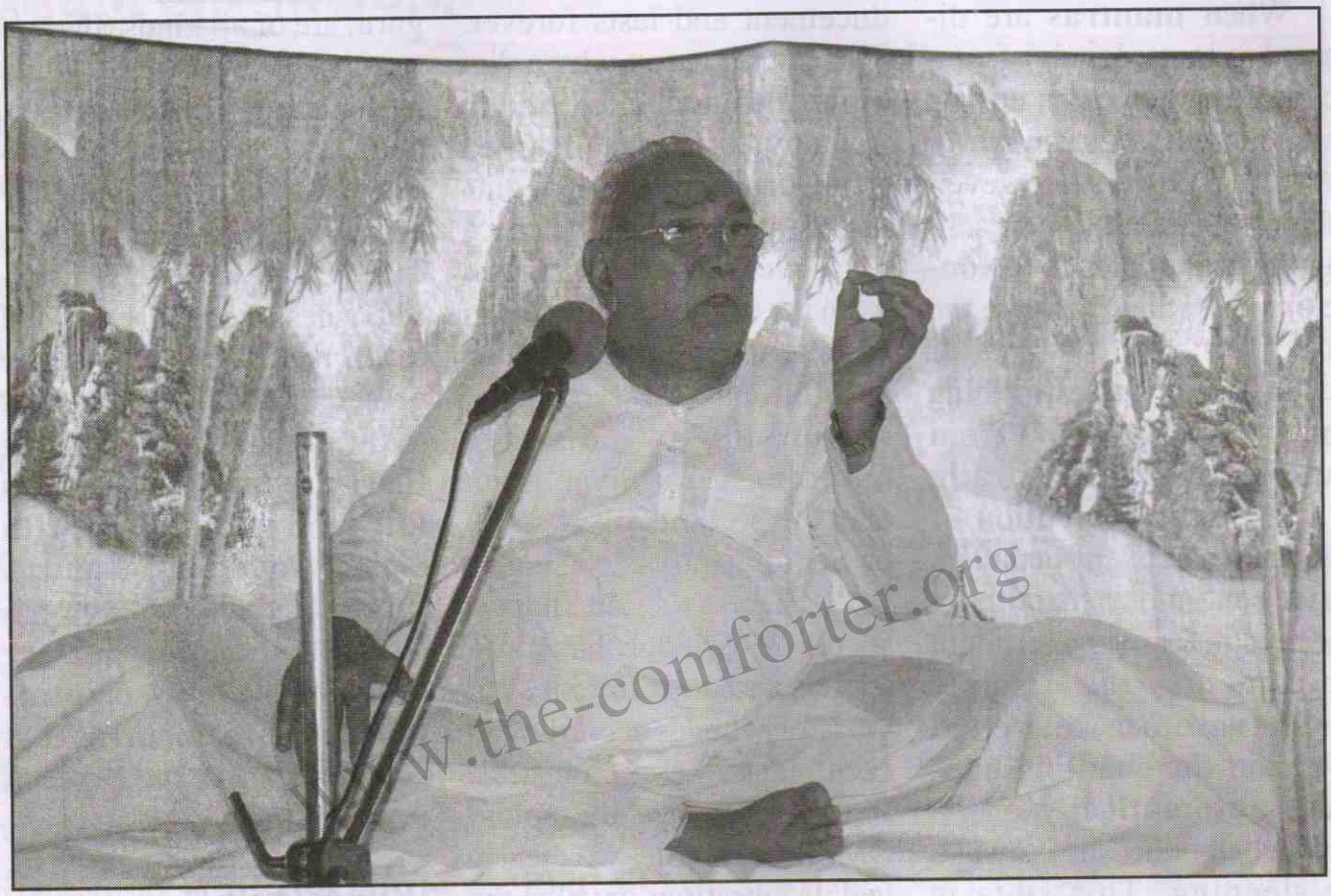

"तू सर्वव्यापी आत्मा है, इसी बात का मनन और ध्यान किया कर। मैं देह नहीं- मन नहीं-बुद्धि नहीं-स्थूल नहीं-सूक्ष्म नहीं- इस प्रकार 'नेति नेति' करके प्रत्येक चैतन्य रूपी अपने स्वरूप में मन को डुबो दे। इस प्रकार मन को बार बार डुबो डुबो कर मार डाल। तभी ज्ञानस्वरूप का बोध या स्व स्वरूप में स्थिति होगी। उस समय ध्याता-ध्येय-ध्यान एक बन जायेंगे- ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान एक हो जायेंगे। सभी अध्यासों की निवृत्ति हो जायेगी। इसी को शास्त्र में 'त्रिपुटि भेद' कहा है। इस स्थिति में जानने, न जानने का प्रश्न ही नहीं रह जाता। आत्मा ही जब एकमात्र विज्ञाता है, तब उसे फिर जानेगा कैसे? आत्मा ही ज्ञान-आत्मा ही चैतन्य आत्मा ही सच्चिदानन्द है।" (६/१६६) -स्वामी विवेकानन्द

यदि ध्यान की असीम गहराई और गहनता को समझना है तो प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?
सद्गुरुदेव सियाग के संजीवनी मंत्र जप के साथ,
इनके चित्र पर 15 मिनट ध्यान करके देखें!

गतांक से आगे...

हृदय मंथन

(६) जितना किसी में राग-द्वेष अधिक होता है, उतना ही उसके लिए जगत् में सत्यता की प्रतीति अधिक होती है तथा उतना ही उसका मन जगत् की घटनाओं से अधिक प्रभावित होता है। राग-द्वेष चित्त की विषम अवस्था है। जितनी विषमता अधिक होगी उतना ही मन अधिक दुःखी होगा तथा उतना ही जीवन जगत्मय होगा। **राग-द्वेष साधन में बड़ा भारी विघ्न है। समता भाव के मन में धारण करने से** राग-द्वेष की वृत्ति दब जाती है ।

(७) राग-द्वेष तथा अन्य विकारों का समूल नाश तो तभी संभव है जब शक्ति अपनी लीलाओं-क्रियाओं से संस्कारों तथा वासनाओं को पूर्णतया क्षीणकर, मन को निर्मल बना देगी। तब चित्त में स्वाभाविक समता का उदय होगा। शक्ति को स्वतंत्र तथा स्वाभाविक क्रियाएँ करने का अवसर प्रदान करना, साधक का कर्तव्य है।

''जो साधक अभिमानयुक्त होकर, क्रियाओं में अपनी इच्छाओं का समावेश करते रहते हैं, उनकी क्रियाओं की स्वतंत्रता तथा स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है।'' उनकी क्रियाओं का आधार, उन के संस्कार नहीं होकर, इच्छाएँ हो जाती हैं। संस्कारों के आधार पर क्रियाएँ, संस्कार क्षय का कारण हैं तो इच्छाओं के आधार पर क्रियाएँ संस्कार संचय का ।

(८) साधक अपने प्राण हथेली पर रखकर साधन करता है। उसे साधन को छोड़कर दूसरी चिन्ता नहीं होती। जगत् उसका मजाक उड़ाए या जगत् में उसका यश-अपयश हो या संसार उसे मूर्ख समझ कर धोखा दे, **वह इन बातों से अप्रभावित बना रह कर,** साधनरत रहता है। जितने भी महापुरुष हो गए हैं, सभी ने अनेक कष्ट सहन किए हैं। सभी को अपने-परायों ने धोखा दिया है। सभी को यश-अपयश के तूफान में से होकर निकलना पड़ा है, तथा सभी को अभावों का सामना करना पड़ा है। आध्यात्मिक उन्नति केवल बातें करने से प्राप्त नहीं हो जाती।

(९) **सारा जगत् चैतन्य से भरा है,** अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे, चैतन्य ही चैतन्य। जिसे लोग जड़ समझे बैठे हैं, वह भी चैतन्य की ही एक स्थिति है, किन्तु यह बात केवल विचार से समझने की नहीं, अनुभव से जानने की है।

यह अनुभव गुरु कृपा से, पहले अपने अन्तर में होता है, शक्ति की क्रियाओं के रूप में। निर्मलता आते जाने के साथ-साथ, यह अनुभव अन्दर से बाहर की ओर विस्तार पाता है। अर्थात् जगत् में भी, जो कि पहले जड़ दिखाई देता था, सर्वत्र चैतन्य ही दिखाई देने लग जाता है ।

(१०) **साधक को बार-बार अपना हृदय मंथन करते रहने की आवश्यकता है। आत्म-निरीक्षण एक ऐसा उपाय है जो साधक को, उसकी वास्तविक आन्तरिक स्थिति को सामने ला खड़ा करता है।**

आत्म-निरीक्षण से लक्ष्य हटते ही अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ सिर उठा लेती हैं तथा साधक के मार्ग से भटक जाने की प्रत्येक संभावना मुँह उठाए, उसके सामने आ जाती है। हृदय-मंथन साधक के दोषों तथा अवगुणों को, समक्ष उपस्थित कर, उसके वास्तविक धरातल से अवगत करा देता है, उसे सोचने-सुधरने का अवसर प्रदान करता है ।

(११) **व्यवहार-शुद्धि के लिए** प्रयत्नशील बने रहने का साधन-पथ में बड़ा महत्त्व है क्योंकि व्यवहार ही साधक को अध्यात्म की ओर भी अग्रसर करता है तथा व्यवहार ही उसे जगत् में धकेल देता है। हमारी वर्तमान दयनीय स्थिति का कारण व्यवहार ही है। साधक में वैराग्य का विकास बहुत कुछ, उसके द्वारा किए जाने वाले व्यवहार पर आधारित है। आसक्तियुक्त व्यवहार बंधन का तथा सेवा-भाव युक्त व्यवहार प्रभु-प्रेम का कारण है।

(१२) **सहनशीलता** एक और महत्त्वपूर्ण, साधन का अंग है जो व्यवहार शुद्धि, प्रारब्ध-क्षय तथा वैराग्य-उदय में महती भूमिका निभाता है। कुछ विद्वान तो सहनशीलता को ही सम्पूर्ण साधन मानते हैं। सहनशीलता ही राग-द्वेष, अनुकूलता-प्रतिकूलता तथा यश-अपयश की भावना को दूर हटाने का माध्यम है। **जगत् की अधिकांश समस्याएँ सहनशीलता के अभाव के कारण ही हैं।** सहनशीलता ही मन में संतोष प्रकट करती है। सहनशीलता के बिना साधन में उन्नति नहीं ।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज
'हृदय मंथन' पुस्तक से

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

एक प्रत्यक्ष भेद है। योग में हमारे आगे भगवान् को लक्ष्य रूप में रखा गया है। जबकि प्रकृति का लक्ष्य है अति-प्रकृति को संपन्न करना। लेकिन ये दोनों ही लक्ष्य एक ही रूप और एक ही अभिप्राय के हैं। भगवान् और अतिप्रकृति में एक वास्तविक और दूसरा उस एक अलभ्य पूर्णता का औपचारिक आकारगत पक्ष है जिसकी ओर हमारे मानव आरोहण के अभियान को दिशा दी गयी है।

मनुष्य के लिये योग धीमे विकासक्रम और लंबे पुनरावर्तनों से मुक्त और भागवत या मानव ज्ञान में आत्म-सचेतन प्रकृति की **ऊर्ध्वमुखी प्रक्रिया** है। भगवान् तत् हैं जो सर्व होते हुए भी सर्व का अतिक्रमण करते और उसके परे हैं। सत्ता में ऐसी कोई चीज नहीं जो भगवान न हो लेकिन भगवान् केवल प्रतीक रूप में एक अपवाद हैं।

वे अपनी चेतना में अपना प्रतिबिम्ब हैं। वे न तो सत् का योगफल हैं और न कुल योग में कोई चीज। दूसरे शब्दों में, हर वह चीज जिसका पृथक् अस्तित्व है, एक प्रतीक विशेष है।

सत्ता का समस्त योगफल एक सामान्य प्रतीक है जो ऐसी सत्ता का, भगवान् का जगत्-चेतना की परिभाषा में अनुवाद करना चाहता है जिसका अनुवाद नहीं किया जा सकता। यह प्रयास के लिये निर्दिष्ट है लेकिन सफलता के लिये निर्दिष्ट नहीं है क्योंकि जिस क्षण इसमें सफलता मिल जायेगी, वह अपने आप होना बंद कर देगा और फिर से वही अननुवाद्य भगवान् बन जायेगा जिससे वह शुरू हुआ था। कोई भी प्रतीक भगवान् को पूरी तरह प्रकट करने के लिये अभिप्रेत नहीं होता, ऊँचे-से-ऊँचा प्रतीक भी नहीं। **लेकिन उच्चतम प्रतीकों का यह सौभाग्य होता है कि वे भगवान् के अंदर अपनी पृथक् निश्चितता खो दें, प्रतीक होना छोड़कर चेतना में वही बन जाये जिसका वे प्रतीक हैं।** मानवजाति भगवान् का ऐसा ही प्रतीक या एक ऐसी प्रतिच्छाया है।

बाइबल की भाषा में हम भगवान् की प्रतिमा के रूप में बने हैं। इसका अर्थ विधिवत् प्रतिमा नहीं बल्कि उनकी सत्ता और उनके व्यक्तित्व की प्रतिमा। हम उनके देवत्व के सारतत्त्व, उनके देवत्व के गुणों से बने हैं। हम दिव्य सत्ता के सांचे में ढले हैं और हमारे ऊपर **दिव्य सत्ता और दिव्य ज्ञान** की छाप है।

हर चीज में जिसका प्रतीयमान अस्तित्व है, या मैं जिस तरह कहना अधिक पसंद करूँगा, वस्तुओं की प्रकृति में ज्यादा गहराई में जाएं तो प्रतीक रूप में, सत्ता के दो भाग हैं, अपने-आपको वस्तु और प्रतीक आत्मा और प्रकृति, रेस (जो चीज है) और फेक्टम (जो चीज की जाती या बनायी जाती है), अक्षर सत्ता और क्षर संभवन, उसके लिए जो चीज अतिप्राकृतिक है और जो चीज प्राकृतिक है।

सत्ता की हर अवस्था में कोई ऐसी शक्ति होती है जो उसे अपने परे जाने की प्रेरणा देती है। जड़ भौतिक, जीवन **या प्राण बनने के लिये आगे बढ़ता है। प्राण मन बनने के लिये घोर परिश्रम करता है, मन आदर्श सत्य बनने के लिये अभीप्सा करता है। सत्य भागवत और अनन्त आत्मा बननेके लिये ऊपर उठता है।**

कारण यह है कि हर प्रतीक, भगवान् की आंशिक अभिव्यक्ति होने के नाते अपनी समग्र यथार्थता बनने के लिये आगे बढ़ता और प्रयास करता है। वह अपने आभासी स्व के परे जाकर अपना वास्तविक **स्व** बनने की **अभीप्सा** करता है, जो चीज बनी है वह उसकी ओर आकर्षित होती है। जो है-संभवन सत् की ओर, प्राकृतिक अति प्राकृतिक की ओर, प्रतीक स्वयं-वस्तुकी ओर और प्रकृति भगवान् की ओर आकर्षित होती है।

इस भांति, **ऊर्ध्वमुखी** गति इस जगत् में आत्म-परिपूर्ति का साधन है। लेकिन यह सभी चीजों के लिये अनिवार्य नहीं है क्योंकि समस्त परिवर्तनशील अस्तित्व के लिये तीन शर्तें हैं : ऊपर की ओर आरोहण, रुकी हुई अवस्था, नीचे की ओर पतन।

वस्तुतः अपनी निचली अवस्थाओं में प्रकृति समस्त राशि के साथ ऊपर उठती है परन्तु अन्तिम निस्तार अपने कुछ सीमित व्यक्तियों के लिये ही चाहती है।

जड़ द्रव्य का हर रूप प्राण को संगठित नहीं करता, यद्यपि जड़ द्रव्य का हर रूप जीवन के भाव से भरा होता है और उसमें मुक्ति और आत्माभिव्यक्ति की माँग भरी होती है।

❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के आधार

श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

योगाभ्यास करने के सदा ही दो पथ होते हैं - एक है सजग मन और प्राण की क्रिया के द्वारा साधना करना, जिसमें मन और प्राण की सहायता से साधक देखता है, निरीक्षण करता है, विचार करता है और निश्चित करता है कि क्या करना चाहिये या क्या नहीं करना चाहिये। अवश्य ही इस क्रिया के पीछे भी भागवत शक्ति विद्यमान रहती है और उस शक्ति का आह्वान कर, उसे अपने अंदर ले आया जाता है-क्योंकि, अगर ऐसा न किया जाये तो फिर कुछ भी विशेष कार्य नहीं हो सकता। फिर भी इस पथ में व्यक्तिगत प्रयास ही प्रधान होता है और वही साधना के अधिकांश भार को वहन करता है।

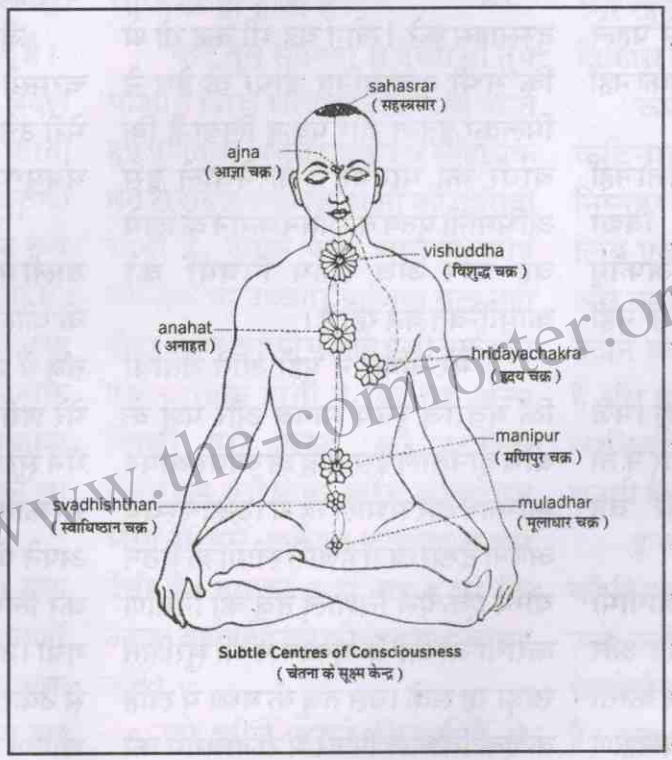

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

दूसरा पथ है हृत्पुरुष का-इस पथ में चेतना भगवान् की ओर उन्मुक्त रहती है, वह केवल हृत्पुरुष को ही नहीं उन्मुक्त करती और सामने ले आती, बल्कि वह मन, प्राण और शरीर को भी उन्मुक्त करती है, ज्योति को ग्रहण करती है, इस बात का ज्ञान प्राप्त करती है कि क्या करना होगा, यह अनुभव करती और देखती है कि स्वयं भागवत शक्ति ही उसे कर रही है तथा भागवत क्रिया को स्वयं भी अपनी सजग और सचेतन सम्मति देकर एवं उसका आह्वान कर निरंतर सहायता करती रहती है।

परंतु जब तक चेतना पूर्णरूपेण उन्मुक्त होने के लिये तैयार नहीं हो जाती, जब तक वह इस प्रकार पूर्णतः भगवान् के अधीन नहीं हो जाती कि उसके सारे कर्मों का प्रारंभ भगवान् के द्वारा ही होने लगे, तब तक बहुधा साधना में इन दोनों मार्गों को मिला-जुला रहना अवश्यंभावी होता है। किंतु जब ऐसा हो जाता है तब साधक का सारा उत्तरदायित्व चला जाता है और उसके कंधों पर कोई व्यक्तिगत भार नहीं रह जाता।

चाहे तपस्या से हो या आत्मसमर्पण से-इससे कुछ भी नहीं आता-जाता; प्रधान बात बस यही है कि साधक लक्ष्य की ओर अपनी दृष्टि बनाये रखने में दृढ़ रहे। एक बार जब उसने अपने पैर इस मार्ग पर रख दिये तब फिर भला किसी तुच्छतर वस्तु के लिये वह कैसे इससे पीछे हट सकता है? यदि साधक दृढ़ बना रहे तो फिर पतनों से कुछ भी नहीं आता-जाता, वह फिर से उठता और आगे बढ़ता हैं अगर वह अपने लक्ष्य पर दृढ़ बना रहे तो भगवान् की प्राप्ति के मार्ग का अंत विफलता में नहीं हो सकता। और अगर तुम्हारे अंदर कोई चीज ऐसी हो जो तुम्हें बराबर आगे चलने के लिये प्रेरित करती हो - वैसी चीज अवश्य ही तुममें है - तो फिर पदस्खलन या पतन या श्रद्धा-विश्वास का भंग हो जाने से अंतिम परिणाम में कोई अंतर नहीं पड़ सकता। जब तक संघर्ष समाप्त नहीं हो जाता और हमारे सामने सीधा, उन्मुक्त और निष्कंटक मार्ग नहीं दिखायी देता तब तक हमें अपने प्रयास में निरंतर लगे रहना होगा।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

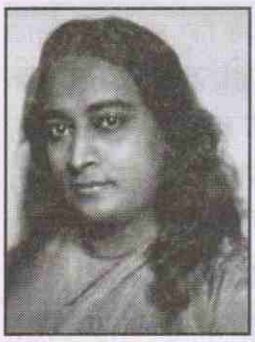

युवराज ने आगे कहा:

''आपकी लडाई आज से एक सप्ताह बाद होगी। हमें खेद है कि हम लड़ाई से पहले बाघ को देखने की अनुमति आपको नहीं दे सकते।'

''युवराज को कहीं यह भय तो नहीं था कि मैं बाघ पर सम्मोहन विद्या का प्रयोग करूँगा या उसे अफीम खिलाने का प्रयास करूंगा, मैं नहीं जानता।

''मैं राजप्रासाद से चल पड़ा। मजे की बात यह थी कि अब की बार न तो राज-छत्र था और न ही वह साजसज्जायुक्त कोच !

अगले सप्ताह भर में, मैं आगामी अग्निपरीक्षा के लिये अपने मन और शरीर, दोनों को विधिवत् तैयार करता रहा। अपने नौकर द्वारा मुझे विलक्षण कहानियाँ सुनने को मिल रही थीं। पिताजी के पास संत ने जो भीषण भविष्यवाणी की थी वह किसी प्रकार लोगों में फैल गयी और फैलते-फैलते बढ़ती गयी। अनेक भोले-भाले ग्रामीणों का विश्वास था कि एक दुष्ट आत्मा ने देवताओं के शाप के कारण बाघ का जन्म लिया था जो रात को विभिन्न आसुरी रूप धारण करती है, परन्तु दिन में फिर से बाघ बनकर रहती है। लोगों का अनुमान था कि यह वही आसुरी बाघ है जिसे मेरा गर्व हनन करने के लिये भेजा गया है।

''एक अन्य कल्पना यह थी कि बाघों की अपने देवता से की गयी प्रार्थनाओं का उत्तर राजाबेगम के रूप में आ गया है। एक लोम-दन्तविहीन मानव नख-दन्त युक्त शक्तिशाली पादयुक्त बाघ को चुनौती देने का दुस्साहस करे ! लोग यह भी कह रहे थे कि सभी अवमानित बाघों के द्वेष ने मिलकर इतना जोर पकड़ लिया है कि बाघों का मानमर्दन करनेवाले इस अभिमानी पुरुष का पतन कराने के लिये वह जोर अब सूक्ष्म नियमों को कार्यान्वित कर रहा है।

''मेरे नौकर ने मुझे आगे बताया कि युवराज स्वयं मानव और पशु के बीच होनेवाले इस द्वन्द्व के व्यवस्थापन का कार्यभार संभाल रहे थे। उन्होंने स्वयं अपनी देखरेख में हजारों लोगों के बैठने योग्य एक ऐसे विशाल तंबू का निर्माण कराया जो आंधी-तूफान में भी सुरक्षित खड़ा रह सके। उस तंबू के मध्य में लोहे के एक विशाल पिंजरे में राजाबेगम को रखा गया था। इस पिंजरे के बाहर सुरक्षा का एक और घेरा था। राजाबेगम निरन्तर खून जमा देनेवाली भयंकर गर्जनाएँ करता जा रहा था। उसकी क्षुधाग्नि और क्रोधाग्नि दोनों को भड़काने के लिये उसे बहुत कम खाना दिया जा रहा था। शायद युवराज को आशा थी कि मैं उसका पुरस्कारस्वरूप भोजन बनूंगा !

''डंका बजा-बजाकर नगर और आस-पास के इलाके में इस अद्वितीय द्वन्द्व की जो घोषणा की जा रही थी, उसे सुनकर लोगों ने भारी संख्या में उत्सुकतापूर्वक टिकटें खरीदीं। द्वन्द्व के दिन सीटों की कमी के कारण सैंकड़ों लोगों को लौटा दिया गया। कई लोग तंबू की दरारों में से अन्दर घुस आये, या गैलरीके नीचे जहाँ भी जगह मिली वहीं खड़े हो गये।''

जैसे-जैसे बाघ स्वामी की कथा चरमसीमा की ओर बढ़ रही थी, वैसे-वैसे मेरी उत्तेजना भी बढ़ती गयी; चण्डी भी मंत्रमुग्ध होकर अवाक् बैठा था।

''राजाबेगम की कान फाड़ देने वाली गर्जनाओं के और भयभीत दर्शकों के कोलाहल के बीच मैंने शान्त मन से तंबू में प्रवेश किया। लंगोट के अतिरिक्त मेरे शरीर पर और कोई कपड़ा नहीं था। मैंने सुरक्षात्मक घेरे के दरवाजे का कुंडा सरकाकर उसे खोला और अन्दर जाकर अपने पीछे शांत मन से दरवाजे को बंद कर लिया। बाघ को रक्त की गन्ध लग गयी। उछलकर धड़ाम से लोहे की छड़ों से टकराने की ध्वनि के साथ उसने मेरा भीषण स्वागत किया। करुणाई भय से दर्शकों में सन्नाटा छा गया; उस अति उग्र बाघ के सामने मैं निरीह मेमना लग रहा था।

''पलक झपकते ही मैं उसके पिंजरे में घुस गया; परन्तु जैसे ही मैंने दरवाजा बन्द किया, राजाबेगम उछलकर सीधा मेरे ऊपर आ गया। मेरा दाहिना हाथ बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गया। बाघ के लिये परम स्वादिष्ट मानव-रक्त की प्रचण्ड धाराएँ गिरने लगीं। संत की भविष्यवाणी सत्य होने के आसार नजर आने लगे।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

मैंने जब कहा था उनकी अब और जरूरत नहीं है तो मेरा मतलब यह नहीं था कि उनकी क्रिया आगे जारी नहीं रह सकती-मैं समझता हूँ, मैंने यह स्पष्ट रूप से कहा था कि यदि साधक इसके प्रति अपने को खुला रखने का आग्रह रखें तो वे जारी रहेंगी। विरोधी शक्तियों की क्रिया में और निम्नतर प्रकृति की साधारण क्रिया में भेद है।

निम्नतर प्रकृति जब तक बदल नहीं जाती तब तक अपनी क्रिया करती रहती है किन्तु इसके लिये उसे विरोधी आक्रमणों का और विक्षोभों का रूप ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है। इसके साथ एक ऐसी मशीन की तरह व्यवहार किया जा सकता है जिसे ठीक करना है और जो उच्चतर प्रकाश और बल की सहायता से ठीक की जा सकती है।

ऐसे भी कुछ लोग हैं, जो एक समय विरोधी शक्तियों के आक्रमणों की पकड़ में आ गये थे, पर अब एक ऐसे स्थल पर पहुँच गये हैं, जहां वे इस पद्धतिका अनुसरण कर सकते हैं; अन्य लोग उसके निकट पहुँच रहे हैं-कुछ लोगों ने इसका हमेशा ही अनुसरण किया और उन पर आक्रमण कभी भी नहीं हुए, कम-से-कम उनके मन और प्राण में। किन्तु अब भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो इससे बहुत दूर हैं और इसलिये विरोधी शक्तियों की क्रिया जारी है।

मैंने यह इसलिये लिखा था कि अब ऐसे प्रकाश और बलका इतना अधिक अवतरण हो चुका है कि व्यक्ति अग्नि-परीक्षाओं और कसौटियों के अधीन रहने को बाध्य नहीं। इन अग्नि-परीक्षाओं आदि को विरोधी शक्तियाँ व्यक्ति के सामने तब रखती हैं जब उसकी प्रगति को सहारा देने के लिये मानसिक भूमिका पर केवल मानसिक या साधारण आध्यात्मिक शक्तियाँ ही होती हैं।

यदि तुम सूक्ष्मता से देखो तो तुम पाओगे कि वे शक्तियाँ अब कार्य करते हुए पूर्णतया अयुक्तियुक्त एवं साहसिक ढंग से सदैव उन्हीं क्रियाओं को दुहराती रहती हैं, उनके पृष्ठ भाग में कोई बौद्धिक या उच्चतर प्राणिक बल नहीं होता। अब उनकी पद्धति ऐसी तर्क हीन एवं यांत्रिक होती है कि वह अन्य किसी भी वस्तु की अपेक्षा निम्नतम भौतिक और अवचेतन भाग में हमें अधिक तमसावृत कर देती है। इसका अर्थ यह हुआ कि उनका वहाँ रहने को कोई यथार्थ कारण नहीं।

जो चीजें तुमने गिनाई हैं वे आक्रमणों की कारण नहीं हैं किन्तु वह एक संयोग, साधकों की ऐसी निर्बलता है जो उन्हें स्वीकृति देती है जब कि उन्हें भलीभांति बहिष्कृत किया जा सकता था। विरोधी शक्तियाँ जगत् में अज्ञान को बनाये रखानेके लिये हैं-उन्हें साधना में इसलिये रहने दिया गया था कि भगवान् के साथ लगे रहने और कठिनाइयों को जीतने के लिये साधकों के बल और संकल्प की सच्चाई की परीक्षा लेने का उन्हें अधिकार था।

किन्तु यह केवल तब तक के लिये है जब तक भौतिक स्तर पर उच्चतर प्रकाश उतर नहीं आता; अब यह उतर रहा है, अब यह वहाँ इतना पर्याप्त विद्यमान है कि इसे कोई भी अधिकाधिक पूर्ण रूप से ग्रहण कर सकता है जिससे मार्ग सरल हो जाय और खुल जाय और वह एक प्रगतिशील विकास हो न कि कोई संघर्ष।

ऊपर से पड़नेवाला दबाव कठिनाइयाँ नहीं उत्पन्न करता। निम्नतर भूमिकाओं में परिवर्तन के लिये एक प्रबल प्रतिरोध विद्यमान है और कुछ शक्तियाँ विक्षोभ के बवण्डर उठाने के लिये इसका फायदा उठाती हैं और यथाशक्ति अधिक-से-अधिक व्यक्तियों को विचलित करने की चेष्टा करती हैं।

इनपर ऊपर से पड़ने वाले दबाव की क्रिया एकमात्र यही होती है कि वह उन्हें व्यक्ति के वातावरण में से या सार्वभौम वातावरण में से भगा देती है। कुछ समय बाद उन्हें व्यक्ति के वातावरण में से या सार्वभौम वातावरण में से बाहर धकेल दिया जाता है और वे उस पर और अधिक कार्य नहीं कर सकती, सिवाय इसके कि वे दूर से और बहुत मन्द प्रभाव के साथ कार्य करें। जब सामान्य रूप से ऐसा करना, अर्थात् आश्रम के वातावरण से उन्हें दूर धकेल देना सम्भव हो जायेगा तो यह सब गड़बड़ शांत हो जायेगी।

संदर्भ-श्री अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

मनुष्य और विकास

मनुष्य के उत्तरोत्तर विकास के संबंध में श्री अरविन्द ने 'दिव्य जीवन' पुस्तक में विषद वर्णन किया है।

वैश्व समग्रता को भी अपने-आप में पूर्ण माना जा सकता है, समग्रता के रूप में उसके लिये अपनी सत्ता की पूर्णता में पाने या जोड़ने के लिये कुछ भी नहीं है। परंतु यहाँ जड़-जगत् समग्र पूर्णता नहीं है, वह एक समग्र का भाग, श्रेणी क्रम में एक श्रेणी है।

अतः वह अपने अंदर न केवल समग्र के उन अविकसित अभौतिक तत्त्वों को या शक्तियों की उपस्थिति को प्रवेश दे सकता है। जो उसके जड़ तत्त्व में अंतर्निहित हैं बल्कि तंत्र की उच्चतर श्रेणियों से उन्हीं शक्तियों को अपने अंदर **अवतरण** करने देता है ताकि यहाँ उनकी सजातीय गतियों को भौतिक सीमांकन की कठोरता से मुक्त कर सके। अस्तित्व की महत्तर शक्तियों की अभिव्यक्ति को जब तक कि सारी सत्ता भौतिक जगत् में उच्चतर, **आध्यात्मिक दृष्टि** के रूप में अभिव्यक्त न हो जाये...**क्रम विकास** का उद्देश्य माना जा सकता है।

यह उद्देश्यवाद ऐसा कोई नया तत्त्व नहीं लाता जो समग्रता में न हो। वह केवल अंश में समग्रता की उपलब्धि का प्रस्ताव रखता है। विश्व की समग्रता के आंशिक गति में सोद्देश्य भाव के तत्त्व को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। यदि उसका प्रयोजन है-मानव अर्थ में प्रयोजन नहीं बल्कि अंदर निवास करनेवाली आत्मा की इच्छा में सचेतन आंतरिक सत्य-आवश्यकता की प्रेरणा हो-वहाँ पर समग्र गति में छिपी सभी संभावनाओं की पूर्ण अभिव्यक्ति। निःसंदेह यहाँ पर सब कुछ अस्तित्व के आनन्द के लिये अस्तित्व रखता है, सभी लीला या खेल है लेकिन खेल के अंदर भी चरितार्थ करने के लिये कोई उद्देश्य रहता है।

और उस उद्देश्य की पूर्ति के बिना सार्थकता पूर्ण न होगी। समाप्ति के बिना नाटक कलात्मक संभावना तो हो सकता है जिसका अस्तित्व पात्रों को देखने के सुख और समाधान के बिना सामने रखी गयी, समस्या या हमेशा के लिये समाधान के संदिग्ध तराजू पर लटकते सुख में है। **पार्थिव-विकास** के नाटक के बारे में कल्पना की जा सकती है कि वह उसी स्वभाव का हो लेकिन अभिप्रेत या अंदर से पूर्व निर्धारित समाप्ति भी संभव और अधिक **विश्वासोत्पादक** रूप से संभव है।

आनन्द समस्त सत्ता का गुह्य तत्त्व और सत्ता की समस्त क्रियाशीलता का सहारा है। बल्कि आनन्द सत्ता में **अंतर्निष्ठ**, सत्ता की शक्ति या इच्छा में व्यापक, उसकी **चित्-शक्ति** की गुप्त आत्म-अभिज्ञता में समर्थित सत्य के क्रियान्वयन में रस को नहीं त्यागता जो उसके समस्त क्रिया-कलापों की गतिशील और कार्यकारी अभिकर्जी और उनके अर्थ की ज्ञाता है।

आध्यात्मिक विकास की परिकल्पना रूप-विकास और भौतिक **जीवन-विकास** की वैज्ञानिक परिकल्पना के साथ अभिन्न नहीं है, उसे अपने ही **अंतर्निहित औचित्य** के बल पर खड़ा रहना चाहिये। वह भौतिक विकास के वैज्ञानिक विवरण को समर्थन दे सकती या किसी तत्त्व के रूप में स्वीकार कर सकती है परंतु यह समर्थन अनिवार्य नहीं है।

वैज्ञानिक कल्पना का केवल बाहरी और **दृश्य यंत्र** और प्रक्रिया के साथ, प्रकृति के कार्यान्वयन के व्योरे के साथ, जड़ में वस्तुओं के भौतिक विकास के साथ, जड़ में प्राण और मन के विकास के विधान के साथ। संबंध रहता है, हो सकता है कि नये अन्वेषण के प्रकाश में उसकी प्रक्रिया के वर्णन में काफी हेर-फेर करना या उसे एकदम छोड़ देना पड़े, लेकिन इसका **आध्यात्मिक विकास** के, चेतना के विकास के, जड़ जीवन में अंतरात्मा की अभिव्यक्ति की प्रगति के **स्वतःसिद्ध** तथ्य पर कोई असर न पड़ेगा। बाहरी दृष्टि से देखें तो विकास का सिद्धांत **पार्थिव जीवन** के सोपान में रूपों और शरीरों का विकास होता है।

जड़तत्त्व का, जड़ में प्राण का, संप्राण जड़ में चेतना का **प्रगतिशील** जटिल और समर्थ संगठन होता है और इस क्रम में, रूप जितनी अच्छी तरह संगठित हो वह उतने ही सुसंगठित, अधिक जटिल और समर्थ, अधिक वर्धित या विकसित प्राण और चेतना को आवास देने में समर्थ होता है।

❖❖❖

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो ? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसे:-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसे:-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसे:- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

www.the-comforter.org

भारत का स्वर्ण युग

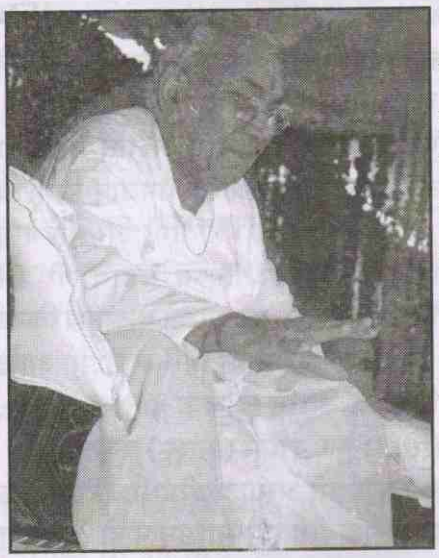

भारत के स्वर्णयुग के बारे में श्री अरविन्द के विचार-''भगवान् की इच्छा है कि भारत सचमुच भारत बने, युरोप की कार्बन कॉपी नही। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्रोत को खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय-ही-विंजय होगी। तुम्हें दूसरे देशों और राष्ट्रों की तरह प्रगति करने की जरूरत। नहीं है। तुम्हें उनकी तरह दूसरों को दबाने और कुचलने की जरूरत नहीं। तुम्हें उठना है ताकि तुम दुनिया को उठा सको। वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से आ रहा है, उसे सारे संसार को देना है।''

आजादी प्राप्त करने के बाद श्री अरविन्द ने कहा था ''हम केवल सरकार का रूप बदलने के लिए तैयारी नहीं कर रहे हैं, ***हम एक राष्ट्र को गढ़ना चाहते हैं।*** राजनीति तो इसका एक छोटा सा भाग हैं। हम केवल राजनीति, सामाजिक संगठन, धार्मिक वाद-विवाद, दर्शन साहित्य या विज्ञान तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखना चाहते। हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है ''धर्म'' और ये सब चीजें और इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ हमारे धर्म की परिभाषा में आते हैं। जीवन के कुछ महान् नियम है, मानव-विकास का एक सिद्धांत है और अध्यात्म-विद्या का एक भंडार है।

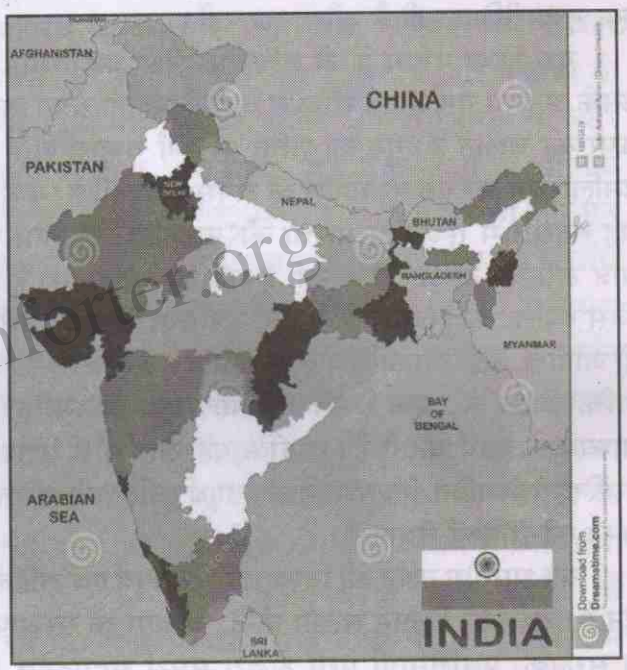

This Map is Provide by Publisher for Printing

ये सब तत्त्व हमारे ''सनातन धर्म'' के अन्दर आ जाते हैं। इसकी रक्षा करना, इसका प्रसार करना और इसका मूर्तिमन्त उदाहरण बनना भारत का कर्तव्य है। विदेशी प्रभाव के कारण भारत अपने धर्म को खो बैठा है। ।सनातन धर्म ''सिद्धांतों का, धार्मिक परिपाटियों का, एक समूह नहीं हैं।

जब तक उसे जीवन में न उतारा जाय, हमारे दैनिक जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज के अन्दर-चाहे वह राजनीति हो या वाणिज्य, साहित्य हो या विज्ञान, वैयक्तिक आचरण हो या राष्ट्रीय कूटनीति - मूर्तरुप से न लाया जाय,तब तक उसकी सफलता नहीं होगी।

''भारत, जीवन के सामने 'योग' का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसक रक्षण करेगा।'' योग के द्वारा सच्ची-स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करने की बात हमें तब तक समझ में नहीं आ सकती, जब तक हम क्रियात्मक ढंग से उसका वास्तविक आनन्द ले नहीं लेते।

भारतीय योगदर्शन उस परमतत्त्व से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने का 'क्रियात्मक पथ' बताता है । उस परमसत्ता में ही मात्र ज्ञान और विज्ञान की पराकाष्ठा है। अभी उसके पास असीम ज्ञान और विज्ञान विश्व में प्रकट करने को पड़ा है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की दिव्य लेखनी से.....

AVSK जोधपुर : हमराह कार्यक्रम में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। (दिसम्बर 2018)

मुम्बई के अश्विनी अस्पताल में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित। (दिसम्बर 2018)

www.the-comforter.org

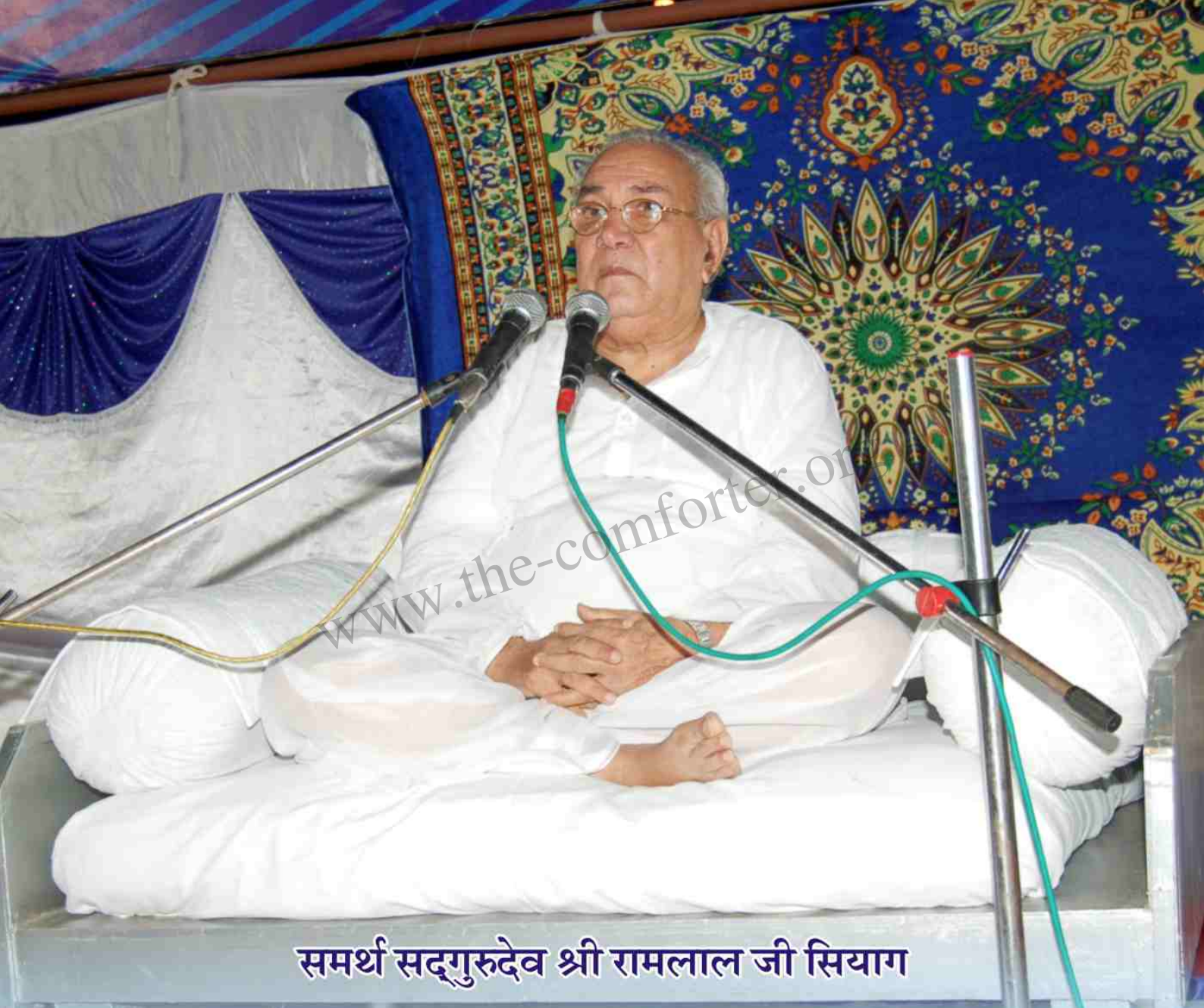

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

''नाम जप''

''इस शरीर रुपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ना
चाहते हो तो 'नाम' ही जपो।''

''नाम जप से विघ्नों का नाश होता है,
विघ्नों का अभाव होता है।''

''नाम जप को भगवान् श्री कृष्ण ने सबसे
उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है।''

www.the-comforter.org

अलीगढ़ (उ.प्र.) के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। हजारों विद्यार्थियों को संजीवनी मंत्र के साथ ध्यान कराया गया। (29 नवम्बर से 8 दिसम्बर 2018 तक)

शिमोगा (कर्नाटक) के विभिन्न विद्यालयों में संजीवनी मंत्र जप के साथ, सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर हजारों विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन से लाभान्वित किया गया। (दिसम्बर 2018)

Avsk मुम्बईः करंजा, मुम्बई में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित। भारतीय नौसेना के जवानों को संजीवनी मंत्र सुनाकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। 23.12.2018

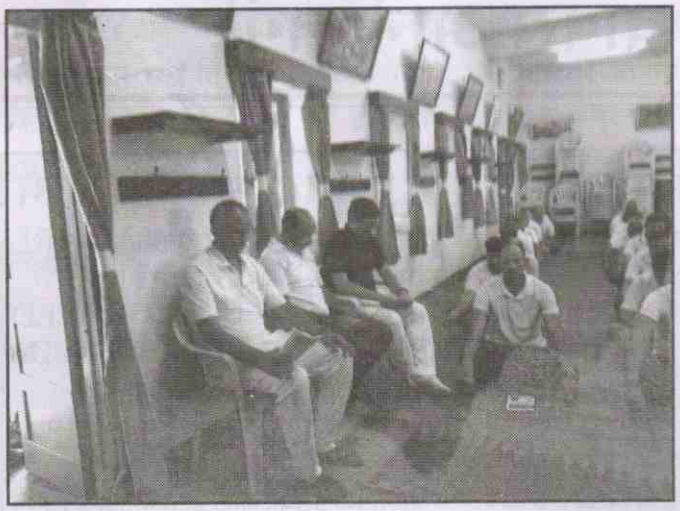

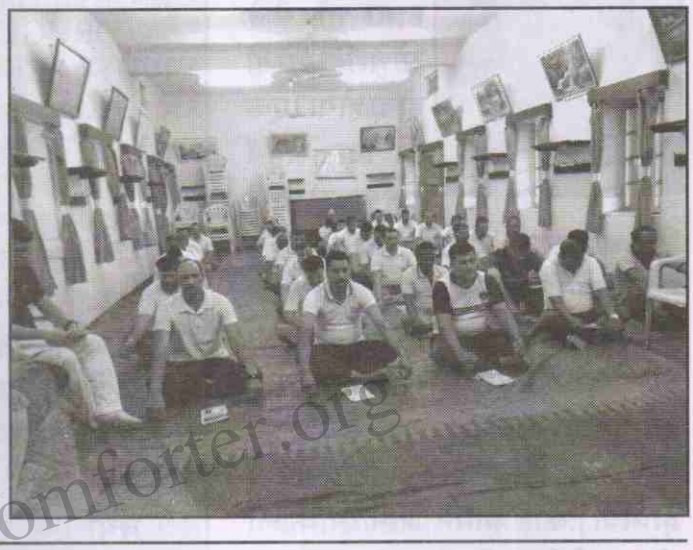

Avsk अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़): सरगुजा जिले की अम्बिकापुर तहसील के केदारपुर गाँव के एक विद्यालय में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित। विद्यार्थियों व शिक्षकों को संजीवनी मंत्र सुनाकर 15मिनट ध्यान कराया गया। 21.12.2018

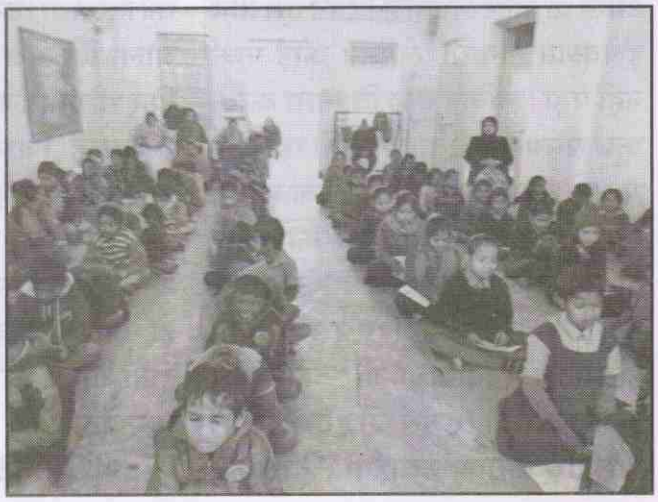

www.the-comforter.org

सिद्धयोग का कमाल
आँखों की रोशनी वापस आने लगी

एक साल पहले हल्का सिर दर्द होने लगा तो मैंने सोचा कि ऐसे ही होता होगा। एक दो दिन सहन किया लेकिन सिर दर्द बढ़ता ही गया। फिर डॉक्टर को दिखाया तो कुछ दवाईयाँ दी और घर भेज दिया। कुछ समय तक दवाईयाँ ली थोड़ा फर्क पड़ा और फिर असहनीय दर्द शुरू हो गया। और कुछ समय बाद एक आँख से बिल्कुल ही दिखना बंद हो गया। कोई सामने आने पर काली दीवार सी दिखती थी।

एम्स जोधपुर के डॉक्टरों को दिखाया तो जाँच करने के बाद बोले कि यह असाध्य रोग है, इसका कहीं भी इलाज नहीं है। फिर राय दी कि एक इंजेक्शन आता है जिससे कुछ राहत मिल सकती है। वह एक इंजेक्शन 6000 रुपये का आता है। जो सीधा आँख के अंदर लगता है। हमने ऐसे तीन इंजेक्शन लगाये। लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। लेकिन कुछ विश्वास करके कुछ समय तक दवाईयाँ लेती रही और यह सोचकर इंतजार किया कि शायद कुछ समय बाद इंजेक्शन का असर होगा। लेकिन जब दर्द ज्यादा बढ़ने लगा तो फिर मथुरादास माथुर हॉस्पीटल में दिखाया और वहाँ से भी इलाज कराया। ए एस जी हॉस्पीटल में भी जाँच कराकर दवाईयाँ ली लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। जोधपुर के शास्त्रीनगर कॉलोनी स्थित ताराबाई देसाई आई हॉस्पीटल में आई विशेषज्ञ (Eye Specialist) डॉ. राजीव देसाई को दिखाया। उन्होंने जाँच करने के बाद बोला कि अब इलाज संभव नहीं है। फिर भी एक इंजेक्शन आता है जो बहुत मँहगा है जिसकी कीमत लगभग 36000 रुपये है।

हमने यह इंजेक्शन भी लगाया। थोड़ी राहत मिली और दर्द वापस शुरू हो गया। बहुत ही ज्यादा असहनीय दर्द होता था। मैं घर का कोई काम भी नहीं कर पाती थी।

मेरे पतिदेव मजदूरी करते हैं। उन्होंने मेरे इलाज में हरसंभव प्रयास किया लेकिन कहीं से भी कोई फायदा नहीं हो रहा था। एक गरीबी और एक बीमारी जो दवाईयों से भी निजात नहीं। आखिर हम बुरी तरह से तंग आ चुके थे।

ताराबाई देसाई के डॉ. राजीव देसाई ने हमारी दयनीय स्थिति देखकर बोला कि आप गरीब परिवार से हो, आप कहीं भी जाओ, चाहे अमेरिका ही जाओ, इसका इलाज नहीं है, इसलिए घर पर ही बैठो और इसकी सेवा करो। अब आप कहीं पर भी मत घूमो।

मेरी बीमारी से मेरे पतिदेव बहुत

सद्गुरुदेव सियाग के चित्र के ध्यान से स्वास्थ्य लाभ

-एम्स जोधपुर के डॉ. अरविन्द मौर्य की रिपोर्ट के अनुसार श्रीमती तुलसीदेवी को RE CNVM+Serpiginous MFC आँख का पर्दा खराब होने की बीमारी है।

-DRUG INDUCED GASTRITIS WITH? DRUG INDCED BRIDYCARDIA ACTIVE MULTIFOCAL CHOROIDITIS BY Dr. Gopal Krishna Bohra

-एम्स जोधपुर, एम डी एम, ए एस जी व ताराबाई देसाई हॉस्पीटल में इलाज कराया गया।

-कई मँहगे इंजेक्शन भी लगाए गए।

-ताराबाई देसाई हॉस्पीटल के डॉक्टर ने बोला कि इसका कोई इलाज नहीं है। आप लोग गरीब हो, कही मत घूमो। गरीबी पर दया आई।

-सद्गुरुदेव सियाग की स्पिरिचुअल-साइंस पत्रिका ने बदली जिन्दगी।

- 27 जुलाई 2018 के कुछ समय बाद में दवाईयाँ बंद कर दी और सिर्फ नाम जप और ध्यान पर ही ज्यादा जोर दिया।

-संजीवनी मंत्र के जप के साथ नियमित ध्यान से वापस आने लगी रोशनी।

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव पर प्रभाव डाल सकता है?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग के संजीवनी मंत्र के जप के साथ,
इनके चित्र पर 15 मिनट ध्यान करके देखें !

www.the-comforter.org

दुःखी थे। एक दिन वे घर पर कोई कागजात संभाल रहे थे। उन कागजों में सद्गुरुदेव सियाग की छोटी पुस्तिका मिल गई। उन्होंने उसको एक तरफ संभाल कर रख दिया और यह सोचा कि **''फुरसत के क्षणों में इसको पढ़ुँगा कि क्या है?''**

उन्हें ज्योंहि ही समय मिला उन्होंने सिद्धयोग की पुस्तिका पढ़नी शुरू की और उनकी ऐसी **'एकाग्रता'** बन गई कि उन्होंने उस पुस्तिका को पूरा पढ़ लिया। उसमें गुरुदेव के कर कमलों से लिखी अपनी **आराधना की बातें, योग, मंत्र, कुण्डलिनी और सिद्धयोग दर्शन की बहुत सी जानकारी** और सबसे ज्यादा यह बातें कि गुरुदेव के चित्र पर ध्यान करने और उनके द्वारा बताये गए **संजीवनी मंत्र के सघन जप द्वारा सभी रोगों व नशों से मुक्ति मिल जाती है।** उस पुस्तिका में कई साधकों के अनुभव थे।

मेरे पतिदेव को विश्वास हो गया। और उन्होंने मुझे पूरी बाते पढ़कर सुनाई और ध्यान की विधि बताई। फिर गुरु पूर्णिमा महोत्सव पर 27 जुलाई 2018 को जोधपुर आश्रम में आए। गुरुदेव की आवाज में पूरा प्रवचन सुना और ध्यान किया। उस दिन गहरा ध्यान लगा। **फिर हमने सारी दवाईयाँ और अन्य भटकाव को छोड़कर केवल मंत्र जप और ध्यान पर जोर दिया** और फिर जब भी मौका मिलता चौपासनी स्थित गुरुदेव के आश्रम में आकर भी ध्यान करते थे। उसका परिणाम यह है कि -

-पहले जहाँ एक आँख से सिर्फ काली छाया के सिवाय कुछ भी आभास नहीं होता था। लेकिन सद्गुरुदेव सियाग की करूण कृपा से आज मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ तथा मुझे दिखना शुरू हो गया है।

-पहले सब भूतों-प्रेतों और मंदिरों के चक्कर लगा चुके थे और अब मन में असीम शांति और एकनिष्ठता आ गई इसलिए सिर्फ **नाम जप और ध्यान** में ही **आनंद** आता है।

मेरी कोई अन्य जगह पर घूमने की भी इच्छा नहीं होती है। मेरे पतिदेव ने कहा कि अपन रामदेवरा दर्शन कर आते हैं लेकिन मैंने साफ मना कर दिया कि आप जा सकते हैं, मैं अब केवल **नाम जप और ध्यान** ही करूँगी, मेरी कोई इच्छा नहीं है।

-**''अबे हूँ कह सकू कि रूपिये में आठ ओंना फर्क पड़ गियो, अर म्हनै पूरो भरोसो है, हूँ पूरी ठीक हो जाऊँ।''** अर्थात् अब मुझे 50 प्रतिशत फायदा है और मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि मैं पूरी तरह से ठीक हो जाऊँगी और मुझे पूरा दिखने लग जाएगा।

-श्रीमती तुलसीदेवी
पत्नी श्री शेषाराम मेघवाल, जोधपुर

www.the-comforter.org

मेडिकल्स रिपोर्ट

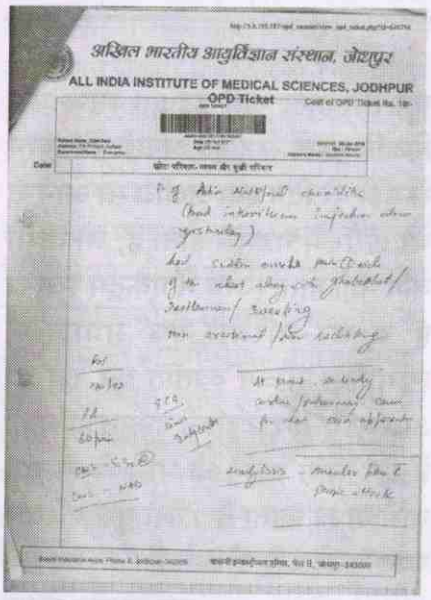

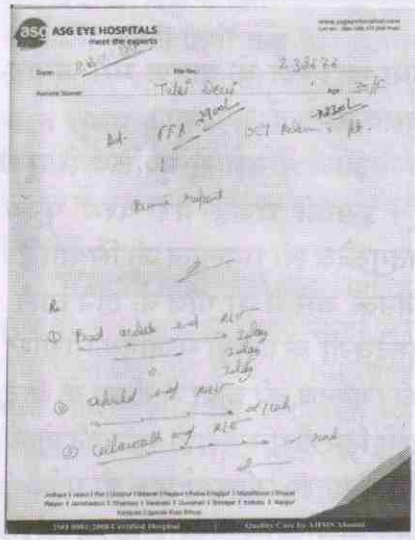

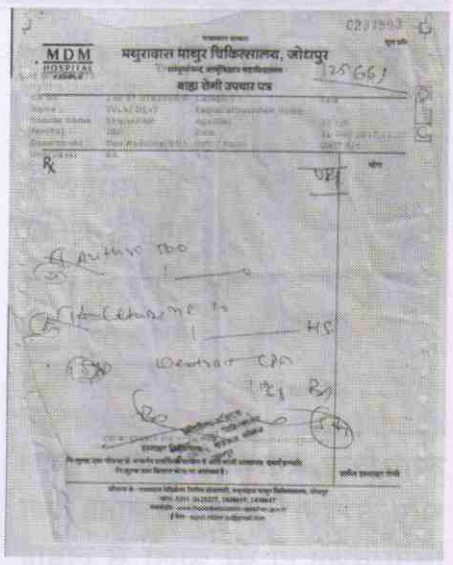

एक साधक के अन्तरंग क्षण

मुझे मई 1989 में गुरुदेव द्वारा दीक्षा दी गई। दीक्षा के पश्चात मैं अपने कार्यस्थल अटक (कोटा) चला गया तथा मुझमें जो परिवर्तन महसूस हुए व अनुभूतियाँ हुई एवं हो रही हैं, वे इस प्रकार हैं-

1. उस समय मैं पान का ज्यादा सेवन करता था लेकिन दीक्षा के पश्चात् जब भी पान सेवन करता तो उल्टी सी होने लगती, और पान से छुटकारा हो गया।

2. मिर्च, मसाला, कचौरी, समौसा व नमकीन इत्यादि का सेवन बन्द हो गया, अगर सेवन कर भी लें तो स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

3. इसी साल दिसम्बर में मुझे सहायक इंजीनियर के लिये संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित विभागीय परीक्षा में सम्मलित होना था। जब मैंने फॉर्म भरकर प्रेषित किया तो उसके चन्द दिनों बाद मुझे रोल नम्बर 1945 अखबार में दिखाई दिये यानी परीक्षा परिणाम। लेकिन जब रोल नम्बर अलॉट हुआ तो वही 1945 व परिणाम निकला तो रोल नं. 1945 अखबार में उसी स्थान पर छपा हुआ पाया, जिस स्थान पर मैंने रोल नं. अलॉट होन से पहले देखा था।

4. मुझे नाना प्रकार की यौगिक मुद्राएँ हुई। इन यौगिक मुद्राओं में मेरा कुछ प्रयास नहीं था, वे अपने आप ही हो रही थी और अन्दर से निर्देश भी मिल रहे थे तथा जैसी मुद्राएँ हो रही थी वैसी की वैसी आँखें बंद करने के बावजूद मु वयं खा ेर ी थी। धीरे-धीरे यौगिक क्रियाएँ होने के बाद बंद हो गई।

5. धीरे-धीरे यौगिक क्रियाएँ होने के बाद बंद हो गई, जो शारीरिक रूप से आवश्यक थी वही होती थी, जहाँ भी शरीर में कोई खराबी है, उसी अंग की क्रियाएँ होती थी और कभी-कभी आज भी होती हैं।

6. योग के बाद मुझे सबसे पहले काला स्पॉट दिखाई दिया, धीरे-धीरे इस ब्लैक स्पॉट का रंग परिवर्तित होते-होते आँख की शक्ल में बाहरी रिंग काली व बीच का हिस्सा लाल व सिंदूरी रंग का मिश्रण जैसा, क्यों कि सही रंग का विश्लेषण असंभव है।

सुरजाराम,
सहायक इन्जीनियर,
केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग,
सी-12, सादुलगंज, बीकानेर

संदर्भ-राजकुल संदेश, 1994

भाँग से मुक्ति

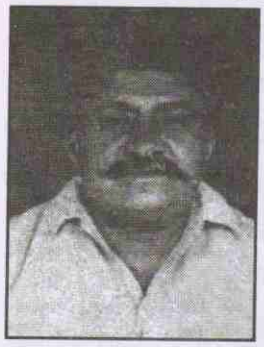

मैं करीब 24 साल से भांग के नशे का आदी था। मैंने इस नशे से छुटकारा पाने के अनेक उपाय किये, मगर कोई लाभ नहीं हुआ। भाँग के बिना मैं पागल हो जाता, तथा बिना वजह ही घर वालों से लड़ाई झगड़ा व गाली-गलौज करता था। इस प्रकार मैं नशे का पूर्ण रूप से आदी हो गया था। नशे के कारण मेरा जीवन अधकारमय हो गया था।

आज मैं नशे से पूर्णरूप से मुक्त हूँ। इसकी वजह मेरे परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग हैं। जिनके बारे में मेरे गाँव के रहने वाले, गुरुदेवजी के शिष्यों से जानकारी प्राप्त की। गुरुदेव की कृपा से दीक्षा के बाद दूसरे दिन ही मैंने जैसे ही भांग की गोली मुँह में डाली, उल्टियाँ शुरू हो गई।

और आन्तरिक भाव से भांग के प्रति बेहद घृणा हो गई तथा पहले जो भांग के कारण तकलीफ होती थी, वह बिल्कुल नहीं हुई। । आज मेरी स्थिति पहले से बहुत अच्छी हैं। ध्यान से मुझे पूरे दिन एक अजीब सा आनन्द मेरे शरीर में महसूस होता हैं, जो कभी कम नहीं होता। अब मैं एकदम स्वस्थ हूँ व घर-परिवार एवं समाज में सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। अब मुझे भांग से इतनी नफरत हो चुकी हैं कि भांग खाने के नाम से ही मन कसैला हो जाता हैं । मेरा पूरा परिवार पूज्य गुरुदेव से दीक्षित हैं।

-उम्मेदराम शर्मा
बालेसर, जोधपुर

संदर्भ-राजकुल संदेश, 1994

www.the-comforter.org

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या

मुझे आज से तीन वर्ष पूर्व एक बहुत खतरनाक बीमारी ने जकड़ लिया था, जिसका नाम सुनने से ही लोग कांप जाया करते है।

वो है सिर में गाँठ (ब्रेन ट्यूमर) तीन वर्ष पूर्व एक दिन अचानक हाथ-पैर एकदम सुन्न हो गये थे, तब बीकानेर में पी.बी.एम. हॉस्पिटल में भर्ती कराया।

जहाँ पर पता चला कि लकवे की स्थिति हो गयी है तथा सिर में गाँठ है । जब बीकानेर में इसका कुछ इलाज संभव न हो सका तो जयपुर जाने को कहा गया। तब तक हाथ पैर सुन्न ही रहे। जयपुर वालों ने एक्स-रे करके इतना जरूर बताया कि गाँठ अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में छोटी ही है। इसे जितना जल्दी निकाला जा सके ठीक है। अतः उन्होंने ऑपरेशन जयपुर में ही करवाने को कहा। लेकिन मेरे पति व देवर को ठीक नहीं लगा तो हम वापस बीकानेर आ गये।

ठीक 15 दिन बाद मुम्बई में बोम्बे हॉस्पिटल एण्ड मेडिकल रिसर्च सेन्टर में दिनांक 23-6-92 को मुझे भर्ती कराया गया, वहाँ डाक्टरों की व्यस्तता के कारण जाते ही ऑपरेशन नहीं हो सका, अतः 20 दिन बाद ही ऑपरेशन हो सका। भगवान् की कृपा से ऑपरेशन सफल हो गया। ठीक दो महीने बाद वापस बीकानेर आई। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा कि मैंने इस खतरनाक बीमारी से थोड़ा बहुत आराम पाया। उसके बाद रोज मेरे सिर की ड्रेसिंग तथा हफ्ते में एक-दो दिन रोजाना हॉस्पिटल जाना होता था। लेकिन तीन-चार महिनों बाद ही धीरे-धीरे सिर के टांके अपने आप बाहर आने लगे तथा खुलने लगे जिससे जहाँ आपरेशन करवाया वहीं अन्दर हड्डी बढ़ने लगी।

जो खतरनाक थी। जहाँ मेरा दुबारा ऑपरेशन किया गया तथा जो हड्डी बढ़ गई थी उसे हटाई गई तथा जो उपचार लिखा था वो मुझे बीकानेर में नियमित रूप से करवाने को कहा गया। इस दौरान तक मुझ पर कम से कम ढाई से तीन लाख रुपये खर्च हो चुके थे। जब मैं पहले ऑपरेशन करवाने गई थी तब मेरे पैर ठीक हो गया था, लेकिन हाथ की अंगुलियों में ज्यादा परिवर्तन नहीं आया। लेकिन मैं अपना काम खुद कर सकती थी।

मैं अपने सारे काम स्वयं ही कर लेती थी। लेकिन जब दुबारा ऑपरेशन करवाया गया तब हाथ की अंगुलियाँ ज्यादा सिकुड़ गयी। मैं अपने काम तो दूर, गिलास से पानी भी नहीं ले सकती थी, क्योंकि हाथ में क्रिया ही नहीं होती थी। मैंने काफी दिनों तक फिजिशियन से मालिस भी करवायी, जिससे थोड़ा बहुत सुधार हुआ। लेकिन वापस वही स्थिति हो गयी। मुझे उठने, बैठने, सोने, चलने में एवं हर काम करने में मुश्किल हो गयी ।

मैं अपने आप कोई काम नहीं कर सकती थी। इसके साथ-साथ मेरी याद्दाश्त कमजोर होती गई। सुबह की बात शाम व शाम की बाद सुबह भूल जाती थी। साथ-साथ मुझे दौरे आने लगते। जब भी मस्तिष्क पर जोर देती थी या किसी बात की चिन्ता करती तो दौरे आने लगते। स्थिति यह हो गयी कि दिन में दो-दो बार दौरे आने लगे।

अपने मन में घुटन महसूस करती, जिससे मैं काफी परेशान हो गयी। क्योंकि कहीं भी किसी वक्त मुझे दौरे आ जाया करते थे। जिससे मुझे 10 मिनट तक कोई होश नहीं रहता इसी दौरान मुझे अपने किसी रिश्तेदार से गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग के सिद्धयोग दर्शन के बारे में बताया गया।

जब गुरुदेव बीकानेर आये हुए थे। तब दिनांक 25-8-1994 को मैंने शक्ति पात दीक्षा ली। रिश्तेदारों ने मुझे बताया कि गुरुदेव कुण्डलिनी जागरण द्वारा अब तक कई लाइलाज बीमारियों को ठीक कर चुके हैं। मुझे गुरुदेव ने बताया कि सिर्फ मंत्र जाप करो व ध्यान लगाओ। अपने आप ठीक हो जाओगी। उसी दिन से मैं सुबह शाम हर वक्त ध्यानवस्था में ही रहती। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सिर्फ 10 दिन के अन्दर ही जहाँ रोजाना दो बार या दिन में एक बार दौरा आता था वहीं 10 दिन के अन्दर मुश्किल से 1 या 2 बार अभी तक दौरा आया। वो भी ज्यादा चिंता या किसी और कारण से वरना शायद वो भी नहीं आता। अतः इस चमत्कार को देखकर मैं दिन रात मंत्र का जाप के साथ ध्यान लगाती हूँ। मुझे पूरी आशा हैं कि 2-3 महिनों में मेरे हाथ की अंगुलियाँ बिल्कुल ठीक हो जायेगी। क्योंकि हमारी आँखों के सामने लोग ठीक होकर जा रहे हैं।

अगर गुरुदेव नहीं मिलते तो पता नहीं क्या होता, लेकिन अब पूरी आशा है कि मैं जल्दी से ठीक हो जाऊँगी। गुरुदेव के पास लोग दुःखी आते है तथा सुखी होकर जाते हैं।

-भंवरी देवी राजपुरोहित
हनुमान हत्था,
बीकानेर-334001

संदर्भ-राजकुल संदेश, 1994

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

अवतार की संभावना और हेतु

''मूढ़ लोग मानुषी तनु में आश्रित मुझे तिरस्कृत करते हैं क्योंकि वे मेरे सर्वलोक महेश्वर परम भाव को नहीं जानते;'' और इन विचारों को सामने रखकर तब इस वचन का अभिप्राय निकालना होगा जो इस समय हमारे सामने है कि उनके दिव्य जन्म और दिव्य कर्म के ज्ञान द्वारा मनुष्य भगवान् के पास आता है और भगवन्मय होकर तथा उनका आश्रित होकर उनके भाव को प्राप्त होता है (मद्भावम्)।''

वहाँ वे अपनी ही सत्ता में प्रकट हैं, यहाँ मानव-आकार में प्रकट हैं। अवतार का दूसरा और वास्तविक उद्देश्य ही गीता के समग्र प्रतिपादन का मुख्य विषय है। यह बात उस श्लोक से ही, यदि उसका यथार्थ रूप से विचार किया जाय तो प्रकट है। पर केवल उस एक श्लोक से ही नहीं--क्योंकि ऐसा करना गीता के श्लोकों का ठीक अर्थ लगाने का गलत रास्ता है-बल्कि अन्य श्लोकों के साथ उसका जो सम्बन्ध है उसका पूरा ध्यान रखते हुए और **समग्र प्रतिपादन** के साथ उसका मेल मिलाते हुए विचार किया जाय तो यह बात और भी अच्छी तरह से स्पष्ट हो जाती है।

गीता का यह सिद्धान्त कि सबमें एक ही आत्मा है, और प्रत्येक प्राणी के हृद्देश में भगवान् विराजमान हैं और साथ ही **सृष्टिकर्ता प्रजापति** और उनकी प्रजा, इन दोनों का जैसा परस्पर-सम्बन्ध गीता बतलाती तथा **विभूति-तत्त्व** का प्रतिपादन जिस जोरदार आग्रह के साथ करती है, इन सभी बातों को ध्यान में रखना होगा और एक साथ विचारना होगा। भगवान् अपने **निष्काम कर्म** का उदाहरण देते हैं, जो मानव श्रीकृष्ण पर उतना ही घटता है जितना सर्वलोक महेश्वर पर, उसकी भाषा को भी ध्यान में रखना होगा और नवें अध्याय के इस वचन को भी उसका प्राप्य स्थान देना होगा कि, ''मूढ़ लोग मानुषी तनु में आश्रित मुझे तिरस्कृत करते हैं क्योंकि वे मेरे सर्वलोक महेश्वर परम भाव को नहीं जानते;'' और इन विचारों को सामने रखकर तब इस वचन का अभिप्राय निकालना होगा, जो इस समय हमारे सामने है कि उनके दिव्य जन्म और दिव्य कर्म के ज्ञान द्वारा मनुष्य भगवान् के पास आता है और

भगवन्मय होकर तथा उनका आश्रित होकर उनके भाव को प्राप्त होता है (मद्भावम्)।

तब हम दिव्य जन्म और उसके हेतु का यह तत्त्व समझ सकेंगे कि यह कोई सबसे न्यारी अचरजभरी विलक्षण-सी चीज नहीं है, बल्कि **जगत्-प्राकट्य** का जो संपूर्ण क्रम है उसमें इसका भी एक विशिष्ट स्थान है; इसके बिना हम अवतार के इस दिव्य रहस्य को समझ ही नहीं सकेंगे, बल्कि इसकी खिल्ली उड़ायेंगे या बिना समझे इसे मान लेंगे अथवा इसके बारे में आधुनिक मन के उन क्षुद्र और बाहरी विचारों में जा फंसेंगे जिनसे इसका जो आंतरिक और उपयोगी अर्थ है, वह नष्ट हो जायेगा।

क्योंकि आधुनिक मन के लिए **अवतार-तत्त्व** तर्कबद्ध मानव-चेतना पर पूर्व की ओर से धारा-प्रवाह आनेवाली विचारधाराओं में एक विचार है और इसे स्वीकार करना या समझना सबसे कठिन है। यदि वह अवतार तत्त्व को उदार भाव से ले तो वह कहेगा कि यह मानव शक्ति का, स्वभाव का, प्रतिभा का, जगत् के लिए जगत् में किये गये किसी महान् कर्म का एक प्रतीक मात्र है और यदि वह इसको अनुदार भाव से ग्रहण करे तो वह कहेगा कि यह एक कुसंस्कार या मूढ़-विश्वास मात्र है।

नास्तिक के लिए यह एक मूर्खतापूर्ण विचार है और यूनानी के लिये मार्ग का रोड़ा। जड़वादी तो इस विचार को अपने ध्यान में भी नहीं ला सकते; क्योंकि वे ईश्वर की सत्ता को ही नहीं मानते; युक्तिवादी या भागवत प्राकट्य को न माननेवाले ईश्वरवादी इसे मूर्खता और उपहास का विषय समझ सकते हैं; कट्टर द्वैतवादियों की दृष्टि में **मानव-स्वभाव** और **देवस्वभाव** के बीच का अंतर कभी मिट ही नहीं सकता, इसलिए उनकी दृष्टि में तो ऐसी बात कहना ईश्वर की निन्दा ही है।

क्रमशः अगले अंक में...

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित **'गीता प्रबंध'** पुस्तक से

www.the-comforter.org

दिव्य प्रेम

(अप्रैल १२, १६०० को सैन फ्रान्सिस्को क्षेत्र में दिया गया भाषण) विवेकानन्द साहित्य-भाग 3)

(पूर्णतया) ईश्वर के प्रेम में ओतप्रोत हो जाना...यह वास्तविक उपासना है ! रोमन कैथोलिक चर्च में तुमको कभी कभी उसकी झाँकी मिल जाती है उन आश्चर्यजनक संन्यासी और संन्यासिनियों में से कुछ अनूठे प्रेम में पागल हो जाते हैं। तुमको ऐसा प्रेम प्राप्त करना चाहिए। **ईश्वर का प्रेम ऐसा होना चाहिए-बिना कुछ माँगे, बिना कुछ जाँचे।**

प्रश्न पूछा गया था : **'उपासना कैसे करें?'** उसकी उपासना ऐसे करो, मानो कि वह अपनी सब सम्पत्ति से **(अधिक प्रिय)** हो, अपने सब संबंधियों से अधिक प्रिय हो, अपनी संतान से (अधिक प्रिय) हो। **(उसकी उपासना उस भाँति करो) जैसे कि तुम स्वयं साक्षात् प्रेम को प्रेम करते।** एक ऐसा है, जिसका नाम **अनन्त प्रेम है।** ईश्वर की केवल यही परिभाषा है। चिंता मत करो, यदि इस...ब्रह्मांड का नाश हो जाता है, जब तक वह अनन्त प्रेम है, हम किसी बात की चिन्ता क्यों करें? (क्या तुमने) समझा कि पूजा का क्या अर्थ है?

अन्य सब विचारों को विलीन हो जाना चाहिए। ईश्वर के अतिरिक्त शेष सब मिट जाना चाहिए। वह प्रेम जो पिता अथवा माता में संतान के लिए होता है, (प्रेम) जो पत्नी में पति के लिए और पति में पत्नी के लिए (होता है), जो मित्र में मित्र के लिए होता है, इन सब प्रेमों को एक स्थान पर एकत्र करके ईश्वर के प्रति अर्पित किया जाना चाहिए। अब, यदि एक नारी एक पुरुष से प्रेम करती है तो वह दूसरे पुरुष से प्रेम नहीं कर सकती। यदि पुरुष एक नारी से प्रेम करता है तो वह दूसरी (नारी) से प्रेम नहीं कर सकता। **प्रेम की प्रकृति ही ऐसी है।**

मेरे वृद्ध गुरु कहा करते थे,'' मान लो कि इस कमरे में सोने की एक थैली है। और दूसरे कमरे में एक चोर है। चोर को अच्छी तरह ज्ञात है कि यहाँ सोने की एक थैली है। क्या वह चोर शांति से सो सकेगा ? निश्चय ही नहीं। वह सारे समय यही सोचने में पागल रहेगा कि मैं सोने तक कैसे पहुँचे।''...(इसी प्रकार), **यदि कोई मनुष्य ईश्वर से प्रेम करता है, तो वह किसी दूसरी वस्तु से प्रेम कैसे कर सकता है?** ईश्वर के उस प्रबल प्रेम के सामने कुछ और ठहर कैसे सकता है? (उसके सामने) सब गायब हो जाता है। मन (उस प्रेम को) पाने के लिए, उसे साकार करने के लिए, उसे अनुभव करने के लिए, उसमें रहने के लिए पागल हुए बिना कैसे रह सकता है?

हमें ईश्वर से इस प्रकार प्रेम करना है: 'मुझे धन नहीं चाहिए, न (घर, न सौंदर्य), न सम्पत्ति, न विद्वत्ता, मुक्ति भी नहीं। यदि तेरी इच्छा हो तो मेरे लिए हजार मौतें भेज। **पर यह वरदान दे कि मैं तुझे प्रेम कर सकूँ और प्रेम के लिए प्रेम कर सकूँ।** वह प्रेम, जो भौतिकतापरायण मनुष्य को अपनी सांसारिक सम्पत्ति के प्रति होता है, वह तीव्र प्रेम मेरे हृदय में आ जाय, पर केवल **परम सुन्दर** के लिए। ईश्वर की जय हो, प्रेममय ईश्वर की जय हो !' ईश्वर इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। उसे उस आश्चर्यजनक बातों की आवश्यकता नहीं है, जो बहुत से योगी कर सकते हैं। छोटे जादूगर छोटे करतब करते हैं। **ईश्वर बड़ा जादूगर है; वह सब करतब करता है।** जितने संसार (हैं), वह उन सबकी देख-भाल करता है। एक दूसरा (मार्ग है), प्रत्येक वस्तु को जीता जाय, प्रत्येक वस्तु को वश में किया जाय-शरीर को (और) मन को जीता जाय।...''प्रत्येक वस्तु को जीतने से क्या लाभ? **मुझे तो ईश्वर से मतलब है !''** (भक्त कहता है) ।

एक योगी था, बड़ा प्रेमी। वह गले के कैंसर से मर रहा था। एक दूसरा योगी, जो दार्शनिक था, उससे मिलने आया। (दूसरे ने कहा, ''मेरे मित्र, तुम अपना ध्यान घाव पर क्यों नहीं लगाते और उसे ठीक क्यों नहीं कराते?'' जब यह प्रश्न तीसरी बार पूछा गया, तो (इस महान् योगी ने कहा, **''क्या तुम यह सम्भव समझते हो कि जो (मन) मैंने सम्पूर्णतया ईश्वर को दे दिया है, वह (इस रक्त-मांस के पंजर पर लगाया जा सकता है)?''**

ईसा ने फरिश्तों के दलों को अपनी सहायता के लिए बुलाने से इन्कार कर दिया था। क्या यह नन्हा शरीर इतना महत्वपूर्ण है कि मैं इसे दो या तीन दिन और रखने के लिए बीस हजार फरिश्तों को बुलाऊँ? (सांसारिक दृष्टिकोण से) मेरा सब कुछ यह शरीर है। यह शरीर मेरा संसार है। मेरा ईश्वर यह शरीर है। मैं शरीर हूँ। यदि तुम मुझे चिकोटी काटते हो तो मेरे चिकोटी लगती है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

! ! मेरे गुरुदेव ! !

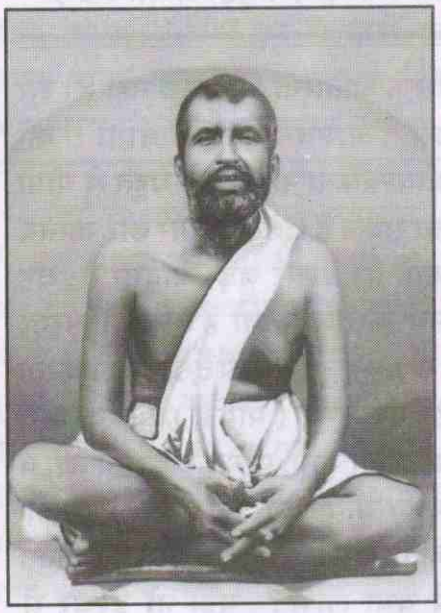

अतः प्रथम हमें चरित्रवान होना चाहिए और यही सबसे बड़ा कर्तव्य है, जो हमारे सामने है। सत्य का ज्ञान पहले स्वयं को होना चाहिए और उसके बाद उसे तुम अनेक को सिखा सकते हो, बल्कि वे लोग स्वयं उसे सीखने आयेंगे। यही मेरे गुरुदेव की शैली थी। उन्होंने कभी किसी दूसरे पर टीका नहीं की। वर्षों, मैं उनके समीप रहा, परन्तु उनके मुँह से कभी किसी दूसरे धर्मपंथ के बारे में, मैंने बुराई नहीं सुनी। सब धर्मपंथों पर उनकी समान श्रद्धा थी और उन सबमें उन्होंने ऐक्य भाव ढूँढ़ लिया था।

मनुष्य ज्ञानमार्गी, भक्तिमार्गी, योगमार्गी अथवा कर्ममार्गी हो सकता है। विभिन्न धर्मों में इन विभिन्न भावों में से किसी एक भाव का प्राधान्य देखा जाता है। परन्तु यह भी सम्भव हो सकता है कि इन चारों भावों का मिश्रण एक ही मनुष्य में हो जाय। भावी मानव जाति यही करेगी भी। यही मेरे गुरुदेव की धारणा थी। उन्होंने किसी को बुरा नहीं कहा, वरन् सबमें अच्छाइयाँ ही देखीं।

इन अद्भुत महापुरुष के दर्शन करने तथा उनके उपदेश सुनने के लिए हजारों मनुष्य आते थे और मेरे गुरुदेव गाँव की भाषा में ही बोलते थे, परन्तु उनका प्रत्येक शब्द ओजस्वी एवं उद्भासित होता था। क्योंकि यह कथ्य नहीं, और जिस भाषा में यह कहा जाता है, वह और नहीं, वरन् वक्ता का व्यक्तित्व ही उसका प्राण है, यही उसमें शक्ति भर देता है। इसका अनुभव हम सभी को कभी कभी होता है।

हम बहुधा अत्यन्त उत्कृष्ट तथा तर्क-वितर्कपूर्ण ओजस्वी भाषण सुनते हैं, परन्तु जब हम घर जाते हैं तो सब कुछ भूल जाते हैं। पर कभी कभी हम बहुत थोड़े से शब्द सुनते हैं और वह भी अत्यन्त साधारण भाषा में, लेकिन वे हमारे हृदय में प्रवेश कर जाते हैं और हमारे जीवन-रस में ही घुलकर हम पर चिरस्थायी प्रभाव डाल देते हैं। जो पुरुष अपने शब्दों में अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डाल सकता है, उसके शब्द प्रभावशाली होते हैं। परन्तु बात यह है कि उस मनुष्य का व्यक्तित्व ही असाधारण होना चाहिए। शिक्षण में सदा कुछ देना तथा लेना रहता है। शिक्षक देता है तथा शिष्य ग्रहण करता है, परन्तु शिक्षक के पास कुछ देने को होना चाहिए तथा शिष्य के लिए ग्रहणशील होना आवश्यक है।

मेरे गुरुदेव कलकत्ता शहर के समीप रहने आये। यह नगर भारत की राजधानी तथा हमारे देश का सबसे महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालय-नगर है, जहाँ से प्रतिवर्ष सैकड़ों नास्तिक तथा भौतिकवादी बाहर निकलते हैं परन्तु फिर भी विश्वविद्यालय के इन्हीं संदेहवादी एवं अज्ञेयवादी व्यक्तियों में से कितने ही लोग इनके पास आते और इनकी बातें सुनते थे। मैंने भी इन महापुरुष के बारे में सुना और इनके समीप इनके उपदेश सुनने गया। मेरे गुरुदेव एक अत्यन्त साधारण मनुष्य के समान प्रतीत होते थे तथा उनमें कोई विशेषता नहीं दिखती थी। वे बहुत साधारण भाषा का प्रयोग करते थे। उस समय मेरे मन में यह प्रश्न उठा कि क्या यह पुरुष वास्तव में महान् ज्ञानी है?

मैं धीरे से उनके पास सरक गया और उनसे वह प्रश्न पूछने लगा, जो मैं अन्य सभी से पूछा करता था। मैंने प्रश्न किया, ''महाराज, क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया, 'हाँ।' मैंने कहा, 'क्या आप सिद्ध करके दिखा सकते हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, 'हाँ।' मैंने कहा, 'कैसे?' उन्होंने उत्तर दिया, ''जैसे मैं तुम्हें यहाँ देख रहा हूँ, उसी प्रकार मैं ईश्वर को देखता हूँ-बल्कि उससे भी अधिक स्पष्ट रूप से।''

इस उत्तर से मेरे मन पर उसी समय बड़ा असर पड़ा, क्योंकि जीवन में मुझे प्रथम बार ही यह ऐसा पुरुष मिला, जिसने तुरन्त ही यह कह दिया कि मैंने ईश्वर को देखा है तथा जिसने यह भी बताया कि धर्म एक वास्तविक सत्य है, और जिस प्रकार हम अपनी इन्द्रियों द्वारा विश्व का अनुभव करते हैं, उससे भी कहीं अधिक प्रमाण में उसका अनुभव किया जा सकता है।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

मिशन हेतु गुरु-शिष्य संवाद

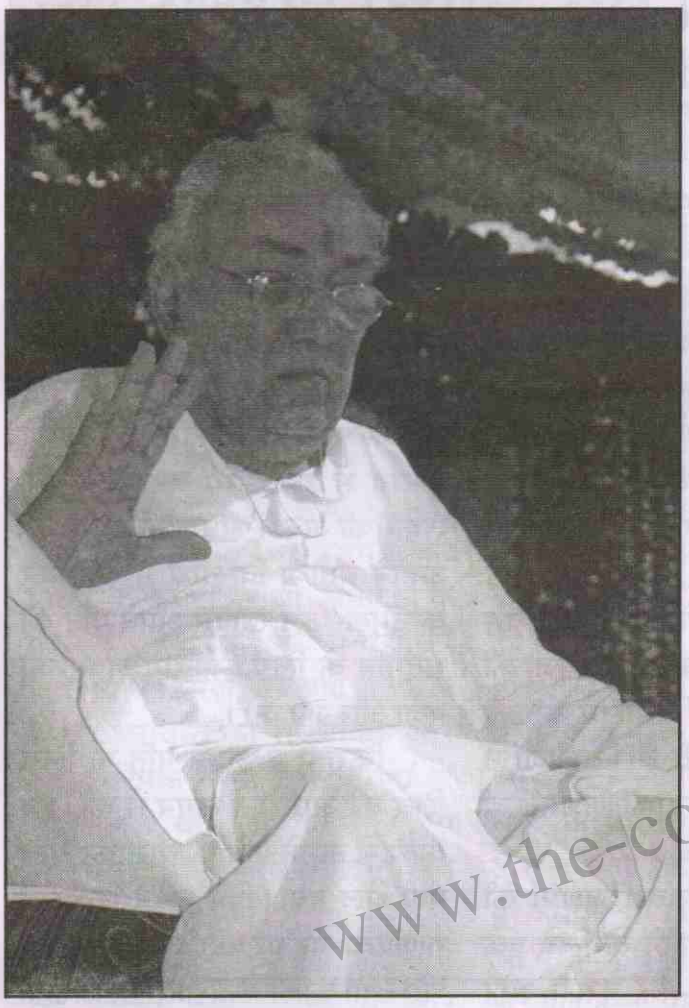

यह बात सन् 1997-98 की है। एक आर.एस.एस का विद्यार्थी, सरदारपुरा (जोधपुर) स्थित गुरुदेव के आश्रम में नियमित रूप से ध्यान करने आया करता था। नियमित रूप से सद्गुरुदेव के सानिध्य में ध्यान करने से उनमें आध्यात्मिक चेतना आई तो एक दिन संन्ध्याकालीन वार्तालाप में उसने सद्गुरुदेव से पूछा-

एक शिष्य के नाते हमें मिशन के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?

गुरुदेव ने बताया कि -"जो सहज में हो जाए, वो करलो!"

जैसा श्री पुखराज जी (एक साधक), जोधपुर ने बताया

www.the-comforter.org

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की असीम कृपा से

सिद्धयोग शिविर

शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण
आध्यात्मिक उत्थान एंव रोग मुक्ति हेतु

कार्यक्रम-मंदिर श्री गोविन्द देव जी,
जलेबी चॉक, जयपुर
दिनांक-13 जनवरी 2019, रविवार, शाम-5 से 7 बजे तक
स्थानीय संपर्क-9828558087, 9252327213

समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

कहानी

चोरी की चोरी

कांचीपुरी में वज्र नामक एक चोर था। उस चोर का यह नाम विशेष सार्थक था। किसी की सम्पति चुराने पर उसके स्वामी को जो कष्ट होता है, उसे सहृदय व्यक्ति ही आँक सकता है। **चोर का हृदय वस्तुतः वज्र का बना होता है।** इसीलिये वह चोरी कर पाता है। यदि चोर को परदुःख कातरता हो तो वह चोरी करना ही छोड़ दे। वज्र ऐसा ही कठोर हृदयवाला चोर था। वह प्रतिदिन थोड़ा-बहुत जो मिलता, सब कुछ चुरा लेता था। चुराये हुए धन को वह राज-रक्षकों द्वारा पकड़े जाने के भय से आधी रात के समय जंगल में जाकर मिट्टी खोदकर गाड़ देता था।

एक रात वीरदत्त नामक एक किरात लकड़हारे ने चोर की यह चेष्टा देख ली। चोर के चले जाने के बाद प्रतिदिन मिट्टी हटाकर सम्पत्ति में से दसवाँ हिस्सा निकाल लेता और गड्ढे को पहले की तरह पत्थर-मिट्टी से ढ़क देता था। लगड़हारा चालाक चोर था। वह इस ढंग से चुराता था कि वज्र इसकी चोरी को भाँप न सके।

एक दिन लकड़हारा अपनी पत्नी को धन देता हुआ बोला-'तुम प्रतिदिन धन माँग करती थी, लो, आज मुझे पर्याप्त धन प्राप्त हो गया है।' पत्नी ने कहा- **'जो धन अपने परिश्रम से उपार्जित किया जाता है, वही स्थायी होता है, दूसरा धन नष्ट हो जाता है।** इसलिये इस धन से जनता के भले के लिये बावड़ी, कुआँ आदि बनवाना चाहिये।' उसके पति को भी यह बात जँच गयी। आस-पास अच्छे-अच्छे कुएँ और तालाब थे। इसलिये उसने दूर देश में एक बहुत बड़ा तालाब खुदवाया। गर्मी में भी उसका जल नहीं सूखता था। तालाब में अभी सीढ़ियाँ लगानी थीं और उसके सब पैसे समाप्त हो गये। वह छिपकर फिर वज्र का अनुसरण करने लगा। देखा करता था कि वज्र कहाँ-कहाँ धन गाड़ा करता है। इस प्रकार दशांश चुराकर उसने तालाब का काम पूरा कर दिया। इसके बाद उसने भगवान् विष्णु और शंकर के भव्य मंदिर भी तैयार कराये। जंगल कटवाकर खेत तैयार कराये। जंगल और उन्हें ब्राह्मणों में वितरण कर दिया। एक बार उसने बहुत-से ब्राह्मणों को बुलाकर वस्त्राभूषणों से उनकी अच्छी पूजा की तथा कुछ ब्राह्मणों के लिये घर की व्यवस्था भी कर दी थी। ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर उसका नाम द्विजशर्मा रख दिया।

कालवश जब द्विजशर्मा की मृत्यु हुई, तब उसे लेने के लिये एक ओर यम के दूत और दूसरी ओर भगवान् शंकर और विष्णु के दूत आये। उनमें परस्पर विवाद होने लगा। इसी बीच नारदजी वहाँ पधारे। उन्होंने सबको समझाया कि 'आपलोग कलह न करें, मेरी बात चुनें। इस किरात ने चोरी के धन से मंदिर आदि तैयार किये हैं। अतः जब तक कुमार्ग से उपार्जित द्रव्यरूप पाप का प्रायश्चित्त नही हो जाता, तब तक यह वायु के रूप में अन्तरिक्ष में विचरण करता रहे।' नारदजी की बात सुनकर सभी दूत लौट गये। वह किरात बारह वर्ष तक प्रेत बनकर घूमता रहा। देवर्षि नारदजी ने किरात की पत्नी से कहा-'तुमने अपने पति को उत्तम मार्ग दिखाया है, इसलिये तुम ब्रह्मलोक जाओ। किंतु किरात की पत्नी अपने पति के दुःख से दुःखी थी। वह ब्रह्मलोक का सुख तुच्छ मानते हुए रोकर देवर्षि से बोली -**'मेरे पति को जब तक देह नहीं मिलती, तब तक मैं यहीं रहूँगी। जो गति मेरे पति की होगी, वही गति मैं भी चाहती हूँ।'** किराती के धर्मयुक्त वचन सुनकर देवर्षि नारद बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे अपने प्रभाव से इस योग्य बना दिया कि शंकर की अच्छी आराधना कर सके। उन्होंने बताया कि तीर्थ में स्नानकर कन्दमूल-फल खाकर अपने पति की सद्गति के लिये भगवान् शंकर की पूजा और जप करे।

किराती ने अपने पति के लिये शिव की आराधना लगन से की। इस कृत्य से उसके पति के चोरी का सारा पाप धुल गया। फिर अपने द्विजशर्मा गाणपत्य-पद पर प्रतिष्ठित हुआ। वज्र चोर तथा कांची के सभी धनी, जिनका इस कार्य में द्रव्य लगा था, सबकी गति हो गई।

बात किसी भी युग की हो, सघन मंत्र जप से ही पापों व कष्टों से मुक्ति पाई है। जीवन के असंख्य विकारों से मुक्ति के लिए सद्गुरुदेव सियाग द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का जप व नियमित ध्यान ही एक साधक की साधना है।

एक साधक का सर्वांगीण विकास ही गुरु दक्षिणा है। सद्गुरु तभी प्रसन्न होते हैं जब शिष्य आराधना में आगे बढ़ता है। इसलिए साधक अपनी आराधना पर ध्यान दें।

❖❖❖

www.the-comforter.org

भारत के उत्थान में योग शक्ति का अद्भुत प्रभाव और राजनीति का गौण रूप

प्राचीन काल में योग की व्यवस्था से जीवन का उच्चतम विकास नहीं हो पाया क्योंकि भौतिक जगत के विकास को नजर अंदाज कर दिया गया। इसलिए वर्तमान में सिद्धयोग साधना में शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण से मनुष्य मात्र में बड़ा ही अद्भुत परिवर्तन आ रहा है। एक साधक अपने गृहस्थ धर्म का पूर्णतः पालन करते हुए किस प्रकार अपना उत्तम, स्वस्थ और आनंदमय जीवन जी सकता है, ऐसा श्री अरविन्द ने अपने भाई बारीन को पत्र के माध्यम से समझाया था। वर्तमान में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग में मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन सम्मिलित है।

''अप्रैल, 1920-(श्री अरविन्द के भाई, बारीन घोष को अलीपुर बम के मामले में मौत की सजा हो गई थी। अपील करने पर यह सजा घटाकर आजीवन अंडमान द्वीपसमूह को निर्वासन कर दी गई थी; क्षमादान के पश्चात् वे 1920 के शुरू में रिहा कर दिये गये थे। इसके शीघ्र बाद ही बारीन ने श्री अरविन्द को राजनैतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोणों से **मार्गदर्शन** के लिए लिखा। श्री अरविन्द द्वारा बंगाली में लिखे गये लंबे उत्तर से कुछ उद्धरण।)

ईश्वर, मनुष्य से जो चाहता है वह है-उसे यहाँ व्यक्ति में और सामूहिकता में साकार करना-ईश्वर को जीवन में प्राप्त करना। योग की प्राचीन व्यवस्था आत्मा और जीवन को समन्वित नहीं कर पाई, न जोड़ पाई; उसने संसार को माया अथवा ईश्वर की क्षणिक क्रीड़ा मानकर रद्द कर दिया।

परिणाम जीवनशक्ति का ह्रास और भारत का अधःपतन हुआ। गीता कहती है, 'उत्सीदेयुरि मे लोका न कुर्या कर्म चेदहम्' (यदि मैं कर्म न करूँ तो ये लोग विकीर्ण होकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ', ३.२४) सचमुच भारत के 'ये लोग बरबाद हो गये हैं। यदि कुछ संन्यासियों, बैरागियों और साधुओं ने आत्मबोध अथवा मोक्ष प्राप्त कर लिया, यदि कुछ भक्त प्रेम के आवेश में, ईश्वर के नशे में और आनंद में नाचने लगें और सारी की सारी जाति जीवन से वंचित होकर, बुद्धि से वंचित होकर घोर तमस् की गहराइयों में डूबी रहे तो यह किस तरह की आध्यात्मिक पूर्णता हुई?

मैंने राजनीति क्यों छोड़ी? क्योंकि हमारी राजनीति असली भारतीय वस्तु नहीं है; वह यूरोप से आयातित है, यूरोपीय तौर-तरीकों की एक नकल मात्र। पर उसकी भी जरूरत थी। हम दोनों भी यूरोपीय शैली की राजनीति में लगे थे; यदि हमने ऐसा न किया होता तो देश ऊपर न उठा होता, और हमें भी अनुभव न मिला होता अथवा पूरा विकास प्राप्त न हुआ होता।...

पर अब समय आ गया है जब हमें परछाई को बढ़ाने की बजाय पदार्थ को पकड़ना चाहिए। **हमें भारत की वास्तविक आत्मा को जाग्रत करना चाहिए** और उसी की प्रतिकृति में सारे कार्यों को ढालना चाहिए। पिछले दस वर्षों से मैं इस यूरोपीय राजनैतिक पात्र में अपना प्रभाव चुपचाप डालता रहा हूँ, और थोड़ा बहुत परिणाम भी हुआ। जब जरूरत पड़े, तब मैं इसे करते भी रह सकता हूँ। किंतु यदि मैं बाहर आकर इस काम को फिर से करने लगूँ, अपने को राजनैतिक नेताओं से मिलाकर उनके साथ काम करने लगूँ तो **यह जीवन के एक विदेशी नियम का समर्थन होगा और एक मिथ्या राजनैतिक जीवन होगा।** लोग अब राजनीति का आध्यात्मीकरण करना चाहते हैं - जैसे उदाहरण के लिए गांधी - पर उन्हें सही तरीका नहीं मिलता। गांधी क्या कर रहे हैं? 'अहिंसा परमो धर्मः' (अहिंसा सर्वोत्कृष्ट नियम है), जैन धर्म, हड़ताल, सविनय अवज्ञा आदि को मिलाकर एक खिचड़ी बना दी जिसका नाम **'सत्याग्रह'** रखा दिया; देश में एक प्रकार के भारतीयकरण किये हुए टॉल्स्टॉयवाद को लाना हुआ। परिणाम होगा-यदि कोई स्थायी परिणाम हुआ तो-एक प्रकार की भारतीयकृत बोल्शेविक विचारधारा। मुझे उनके काम में कोई आपत्ति नहीं है। प्रत्येक को अपनी प्रेरणा के अनुसार काम करने दो। **पर यह वास्तविक वस्तु नहीं है।**

मेरा यह विश्वास है कि भारत की कमजोरी का प्रमुख कारण उसकी दासता नहीं है, न गरीबी और न आध्यात्मिकता अथवा धर्म की हीनता, बल्कि वह है- विचार-शक्ति का ह्रास, ज्ञान की मातृभूमि में अज्ञान का विस्तार। सर्वत्र में विचार करने की अयोग्यता अथवा अनिच्छा-विचार की

असमर्थता या विचार-भीति देखता हूँ। मध्य युग में जो भी रहा हो, इस समय यह प्रवृत्ति महान अवनति का लक्षण है। मध्य युग तो एक रात थी, अज्ञानी आदमी की विजय का समय; आधुनिक विश्व ज्ञान के आदमी की विजय का समय है।

जो भी अधिक विचार करके, अधिक खोज करके, अधिक श्रम करके, विश्व के सत्य को अधिक थाह और सीख सकेगा वही अधिक शक्ति प्राप्त करेगा। यूरोप की ओर देखो तो तुम्हें दो चीजें दिखाई देंगी; विचार का एक व्यापक असीम सागर और एक विशाल और तीव्र, पर अनुशासित बल की क्रीड़ा। यूरोप की सारी शक्ति वहीं निहित है।

इसी शक्ति के बल पर वह विश्व को निगल सका, हमारे पुरातन तपस्वियों की तरह, जिनकी शक्ति से ब्रह्मांड के देवता भी भयभीत रहते थे, दुविधा में बने रहते और अधीनता स्वीकार करते थे। लोग कहते हैं कि यूरोप विनाश के जबड़ों में तेजी से घुसा जा रहा है। मैं ऐसा नहीं समझता। ये सारी क्रांतियाँ, ये सारी उखाड़-पछाड़ नये सृजन की प्राथमिक अवस्थाएँ हैं।

अब भारत को देखो; कुछ एकाकी दिग्गजों को छोड़कर, **सर्वत्र तुम्हारा 'सीधा आदमी' है**, वह तुम्हारा औसत आदमी जो न सोचेगा और न सोच सकता है, जिसमें जरा-सी भी शक्ति नहीं है, बस एक क्षणिक उत्तेजना है।... अंतर यहाँ पर है। पर यूरोप की शक्ति और विचार की एक विघातक सीमा है। जब वह आध्यात्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उसकी विचार-शक्ति काम करना बंद कर देती है। वहाँ यूरोप को सब कुछ एक पहेली, धुंधली तत्त्व-मीमांसा, यौगिक विभ्रम जैसा दिखाई देता है। - 'वह अपनी आँखें मलता है, जैसे कि धुएँ में, पर कुछ भी साफ-साफ नहीं देख पाता। तो भी अब यूरोप में इस सीमा को भी लाँघने का महान् प्रयास हो रहा है। **''हम अपने पूर्वजों को धन्यवाद दें कि हमारे पास आध्यात्मिक समझ है।''**

और जिसमें भी यह समझ है, उसकी पहुँच के भीतर ऐसा ज्ञान है, ऐसी शक्ति है कि एक ही फूँक में वह यूरोप की सारी महान् शक्ति को तिनके की तरह उड़ा सकता है। **किंतु उस शक्ति को पाने के लिए भी शक्ति चाहिए।** पर हम तो शक्ति के पुजारी ही नहीं हैं; हम तो **सुगमता** के पूजक हैं।.. हमारी सभ्यता, अस्थि पंजर बन गई है, हमारा धर्म बाह्य बातों का मताग्रह, हमारी आध्यात्मिकता प्रकाश की एक फीकी टिमटिमाहट अथवा नशे की एक क्षणिक तरंग। जब तक ऐसी परिस्थिति बनी रहती है तब तक भारत का कोई स्थायी पुनरुत्थान असंभव है।...

हमने शक्ति की साधना छोड़ दी है और इसलिए शक्ति ने हमें छोड़ दिया। हम प्रेम के योग का अभ्यास करते हैं, पर जहाँ ज्ञान या शक्ति नहीं है, वहाँ प्रेम टिकता नहीं है, संकीर्णता और क्षुद्रता आ जाती है। संकीर्ण और लघु मानस, जीवन और हृदय में प्रेम को कोई स्थान नहीं मिलता। बंगाल में प्रेम कहाँ है? इस विभाजन से भरे भारत में भी और कहीं इतना झगड़ा, तनावपूर्ण संबंध, ईर्ष्या, घृणा और गुटबंदी नहीं है जितनी बंगाल में। आर्य लोगों के **भव्य वीरत्व** के युग में इतनी चीख-चिल्लाहट और अंगविक्षेपण नहीं था, पर जिस प्रयास को उन्होंने गति दी, वह अनेक सदियों तक चला। बंगाली का प्रयास एक या दो ही दिन चलता है। तुम कहते हो कि जो आवश्यक है वह भावनात्मक उत्तेजना है, देश को उत्साह से भर देना है।

हमने स्वदेशी अवधि में राजनैतिक क्षेत्र में वह सब कुछ किया था; पर जो कुछ हमने किया था, वह सब अब धूल में पड़ा है।... इसलिए अब मैं भावनात्मक उत्तेजना, संवेदना और मानसिक उत्साह को आधार नहीं बनाना चाहता।

एक व्यापक और वीरतापूर्ण समानता को मैं अपने **योग की नींव** बनाना चाहता हूँ; जीव की सभी क्रियाओं में, उस समानता पर आधारित आधार की क्रियाओं में, मैं संपूर्ण, दृढ़ और अडीग शक्ति चाहता हूँ; शक्ति के उस महासागर के ऊपर मैं चाहता हूँ कि ज्ञान का सूर्य अपनी व्यापक किरणें बिखेरें और उस देदीप्यमान व्यापकता में अनंत प्रेम, आनंद और एकत्व का **हर्षोन्माद** स्थापित हो।

मुझे दसियों हजार चेले नहीं चाहिए; **यदि मुझे ईश्वर के उपकरणों के रूप में क्षुद्र अहंकार से मुक्त सौ संपूर्ण व्यक्ति भी मिल जाएँ तो बहुत हैं।** मुझे गुरु के प्रचलित व्यापार में विश्वास नहीं है। (जो वर्तमान में धर्म और गुरु के नाम पर व्यापार चल रहा है) मैं गुरु बनना भी नहीं चाहता। मैं जो चाहता हूँ वह यह कि कुछ लोग मेरे अथवा किसी और के स्पर्श से **''जाग्रत''** हो जाएँ और भीतर से अपने सोये हुए **''देवत्व''** को प्रकट करें तथा **''दिव्य जीवन''** प्राप्त करें। ऐसे ही लोग इस देश को ऊपर उठायेंगे।

-महर्षि श्री अरविन्द,
''भारत का पुनर्जन्म''
पुस्तक का पेज-160-163

www.the-comforter.org

सद्गुरु की प्रसन्नता
जीवन का सर्वोत्तम विकास

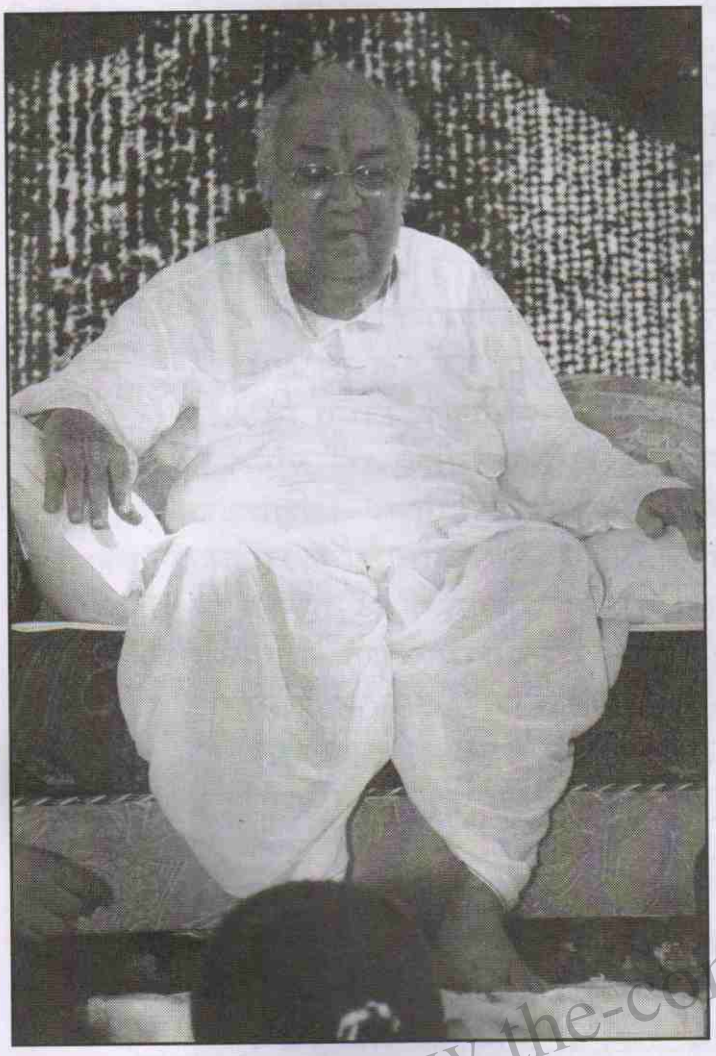

गुरु की सर्वोत्तम व्याख्या है-जो 'गोविन्द से मिलाय' इसीलिए ईश्वर की स्थिति और प्राप्ति के संबंध में कहा गया है-

"जो सभी मानव शरीरों में व्याप्त, हृदय में प्रतिक्षण पूर्णरूप से निवास करते रहने पर भी, जो 'श्रीगुरुकृपाहीन' को गोचर *(Transit, पारगमन)* न होकर गुप्तवास कर रहा है, वही वेदान्त का अन्तिम लक्ष्य सच्चिदानंद है।"

मंत्र का रहस्य जब तक समझ में नहीं आता, तब तक साधक उससे कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। मंत्र का रहस्य कैसे जाना जा सकता है, इस संबंध में मालिनीविजयतंत्र में कहा गया है-

शिष्येणापि तदा ग्राह्या यदा सन्तोषितो गुरुः।
शरीर द्रव्य विज्ञान शुद्धि कर्म गुणादिभिः।।
बोधिता तु यदा तेन गुरुणा दृष्ट चेतसा।
तदा सिद्धिप्रदा ज्ञेया
नान्यथा वीरबन्दिते।।3:49,48।।

मंत्र का रहस्य तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु शिष्य के सद्गुणों से संतुष्ट हो जाते हैं। हे देवी ! जब गुरु हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं, और मंत्र मुक्ति देता है, 'गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।'

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

ॐ श्रीगंगाई नाथाय नमः (5)

मैं अपनी वाणी का प्रसार करने के लिए इस जाति को ऊपर उठा रहा हूँ। यही वह सनातन धर्म है, जिसे तुम पहले सचमुच नहीं जानते थे, किन्तु जिसे अब मैंने तुम्हारे समक्ष प्रकट कर दिया है। तुम्हारे अन्दर जो नास्तिकता थी, जो संदेह था, उनका उत्तर दे दिया गया है, क्योंकि मैंने अन्दर और बाहर, स्थूल और सूक्ष्म सभी प्रमाण दे दिये हैं, और उनसे तुम्हें संतोष हो गया है। जब तुम बाहर निकलो तो सदा अपनी जाति को यही वाणी सुनाना कि वे सनातन धर्म के लिए उठ रहे हैं, वे अपने लिए नहीं बल्कि संसार के लिये उठ रहे हैं। मैं उन्हें संसार की सेवा के लिए स्वतंत्रता दे रहा हूँ। अतएव जब यह कहा जाता है कि भारत ऊपर उठेगा तो उसका अर्थ होता है सनातन-धर्म ऊपर उठेगा। जब कहा जाता है कि भारत महान होगा तो उसका अर्थ होता है सनातन धर्म महान होगा। जब कहा जाता है कि भारत बढ़ेगा और फैलेगा तो इसका अर्थ होता है सनातन धर्म बढ़ेगा और सम्पूर्ण विश्व पर छा जावेगा। भारत, धर्म के द्वारा और धर्म के लिये ही अस्तित्व में है। धर्म की महिमा बढ़ाने का अर्थ है देश की महिमा बढ़ाना। मैंने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं सब जगह हूँ, सभी मनुष्यों और सभी वस्तुओं में हूँ, मैं इस ~~आन्दोलन~~ आन्दोलन में हूँ और केवल उन्हीं के अन्दर कार्य नहीं कर रहा हूँ जो देश के लिए मेहनत कर रहे हैं, बल्कि उनके अन्दर भी जो उनका विरोध करते और मार्ग में रोड़े अटकाते हैं। मैं प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर काम कर रहा हूँ और मनुष्य चाहे जो कुछ सोचें या करें, परवे मेरे "हेतु" की सहायता करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते। वे भी मेरा ही काम कर रहे हैं; वे मेरे शत्रु नहीं मेरे यंत्र हैं। तुम यह जाने बिना भी कि तुम किस ओर जा रहे हो, तुम अपनी सारी क्रियाओं के द्वारा आगे ही बढ़ रहे हो। तुम करना चाहते हो कुछ पर कर बैठते हो कुछ और।

क्रमशः अगले अंक में...

सच्चा आनन्द, जिसे संतों ने नाम खुमारी या नाम अमल की संज्ञा दी हैं, लोगों को प्राप्त हो रहा है, वह मात्र ईश्वर कृपा और गुरुदेव के आशीर्वाद से ही सम्भव हो सका।

यह कार्य मानवीय प्रयास से सम्भव नहीं था। **मुझे मूलाधार से सहस्रदलकंवल तक की यात्रा में कोई विशेष कष्ट नहीं हुआ और आगे का असम्भव आरोहण गुरु कृपा से अनायास ही हो गया।** इस प्रकार मैं देखता हूँ कि मैंने इच्छा शक्ति से प्रेरित होकर इस जन्म में कुछ नहीं किया। अतः जो कुछ मैं बाँटने निकला हूँ, उसमें मेरा कुछ भी नहीं है।

मेरे गुरुदेव के आशीर्वाद और ईश्वर कृपा से जो सात्विक धन मिला है, वही बाँटने संसार में निकल पड़ा हूँ। इस समय मुझे दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ रही है। मेरे परिवार के प्रति अभी काफी जिम्मेदारियाँ है। परमार्थ के कार्य के साथ इन जिम्मेदारियों को निभाने का भी स्पष्ट आदेश है। **मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि जब तक परिवार का कर्ज पूरा न चुका सकूँ, उनसे विमुख होने का अर्थ होगा, योग भ्रष्ट होना।** हमारे वेदों में वर्णित उस प्रकाश प्रद शब्द से ही यह पूर्ण आरोहण सम्भव हो सका। मैं देख रहा हूँ-श्री अरविन्द ने जिस चेतना की बात कही है, उसकी सफलता मुझे वेदों में वर्णित **'प्रकाशप्रद शब्द'** से ही प्राप्त हुई है।

मैं देख रहा हूँ-मुझसे जुड़ने वाले सभी लोगों को प्रत्येक के कर्मफल के अनुसार मूलाधार से लेकर उस परम सत्ता तक सभी शक्तियों की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार हो रहा है। इस युग में जब कि संसार के आम लोगों का धर्म पर से विश्वास प्रायः उठ चुका है, मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के माध्यम से ऐसा होना एक आश्चर्य है।

प्रारम्भ में मुझे खुद को इस पर विश्वास नहीं हुआ, परन्तु उस परमसत्ता के पग-पग पर, पथ प्रदर्शन से मुझे समझने और विश्वास करने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। सत्युग को छोड़ कर बाकी युगों में धर्म निरन्तर ह्रासोन्मुख ही रहा। अब अचानक यह परिवर्तन होना स्पष्ट रूप से युग परिवर्तन का संकेत है।

संसार में सात्विक सत्ता के पूर्ण लोप के साथ-साथ तामसिक शक्तियों के मरणासन्न पहुँचने की मुझे जो प्रत्यक्षानुभूति करवाई गई, वह भी इस बात का स्पष्ट संकेत है। पुनः उस परम सत्ता के उदय होने पर संसार में बची-खुची शक्तियाँ समाप्त होने में कोई समय नहीं लगेगा।

मुझे संसार में होने वाले इन परितर्वनों का काफी पहले संकेत मिल चुका था, परन्तु मैं उसे समझ नहीं सका। परन्तु उस परमसत्ता ने जब अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया तो धीरे-धीरे मेरे सामने सारी स्थिति स्पष्ट होती चली गई। घटनाक्रम जिस प्रकार करवट ले रहा है, मैं देख रहा हूँ, मुझे अधिक समय तक भारत में नहीं रहने दिया जायेगा।

जीवन कम है और कार्य अधिक। यही कारण है छह वर्ष पहले सेवानिवृत्त होने को मजबूर कर दिया। संसार के आम मानव को यह सब सुनकर विश्वास नहीं हो सकता, परन्तु यह एक सच्चाई है। मैं कुछ दिन इस क्षेत्र में प्रवेश करते हुए भी भागता रहा, परन्तु मुझे जबरदस्ती धकेल दिया गया। धीरे-धीरे झिझक खत्म हो रही है। जब मैंने देख लिया कि जो कुछ करना निश्चित है, उसे तो करना ही पड़ेगा। जो पथ पहले ही दिखा दिया गया था, उस पर चलने में अधिक कठिनाई नहीं हो रही है।

पहले कुछ असम्भव सा लग रहा था, परन्तु पूर्व निर्दिष्ट घटनाएँ आस्वस्त कर रही हैं कि गलत नहीं चल रहा हूँ। मेरे अलावा मेरे से सम्बन्धित लोगों का उन्हीं घटनाओं का पुनरावलोकन इस बात को और सत्यापित कर रहा है। मैं जब विदेशी लोगों से सम्पर्क की बातों पर विचार करता था, तो मुझे सब असम्भव और काल्पनिक लगती थी। परन्तु घटनाक्रम के परिवर्तनों ने ऐसी सभी अनुभूतियों को सही होने का स्पष्ट संकेत दे दिया है। संसार के लोग महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणी को जब उनकी कल्पना कहते हैं तो मुझे बड़ा अजीब सा लगता है।

उन्हें जो स्पष्ट बताया जाता था, वह बात श्री अरविन्द कहते थे। भविष्य के बारे में उन्होंने स्पष्ट कहा है:-**''अगर सब कुछ नष्ट भ्रष्ट हो जाय तो भी मैं उस विनाश के परे नये सृजन की राह देखूँगा। आज संसार में जो कुछ हो रहा है उससे मैं जरा भी नहीं घबराया हुआ हूँ।** मैं जानता था कि घटनाएँ ऐसा रूप लेगी। रही बात बौद्धिक आदर्शवादियों की, मैंने उनकी आशाओं को नहीं स्वीकारा, इसलिए मैं निराश भी नहीं होता।''मुझे जब स्पष्ट आदेश मिलते थे तो बड़ा अचम्भा होता था। कुछ असम्भव और अजीब सा लगता था। परन्तु जब से श्री अरविन्द को पढ़ा, मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मैं गलत नहीं हूँ। श्री अरविन्द की इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया:-

''भगवान की इच्छा है कि भारत सचमुच भारत बने, योरोप की कार्बन कॉपी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्त्रोत खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय-ही-विजय होगी।'' भौतिक विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि अगर पूरी शक्ति को सृजन में लगा दिया जाय तो संसार में किसी वस्तु का अभाव नहीं रहेगा। पूरा संसार जब उस सात्विक चेतना से प्रभावित हो जायेगा तो फिर द्वेष, हिंसा, घृणा, और वैरभाव का संसार से अन्त हो जायेगा। इस प्रकार प्रेम, दया, सद्भाव का वातावरण पूरे संसार में हो जायेगा।

जो कुछ मुझे बताया जा रहा है, जब वह परिणाम संसार के लोगों को आध्यात्मिक आराधना से प्रत्यक्ष मिलने लगेगा तो पूरा संसार उस परमसत्ता के चुम्बकीय आकर्षण में अनायास ही आ जायेगा। उस समय भगवान् श्रीकृष्ण की वह बात सत्य प्रमाणित हो जायेगी। भगवान ने कहा था - **''सब धर्मों को छोड़ कर मेरी शरण में आ जा, मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दुँगा।''**

परमपद की प्राप्ति के लिए सद्गुरुदेव सियाग द्वारा बताई गई आराधना-नाम जप व ध्यान ही मुख्य साधन है, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनवरत आराधना करते रहिये।

-सम्पादक

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

डूंगरपुर, तहसील-सांगोद, जिला-कोटा में शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम आयोजित। (24-11-2018)

शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र (डाईट) कोटा में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (10-12-2018)

गुरु कृपा केरियर फाउण्डेशन छात्रावास, आर.के. पूरम, कोटा में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित। (दिसम्बर 2018)

www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

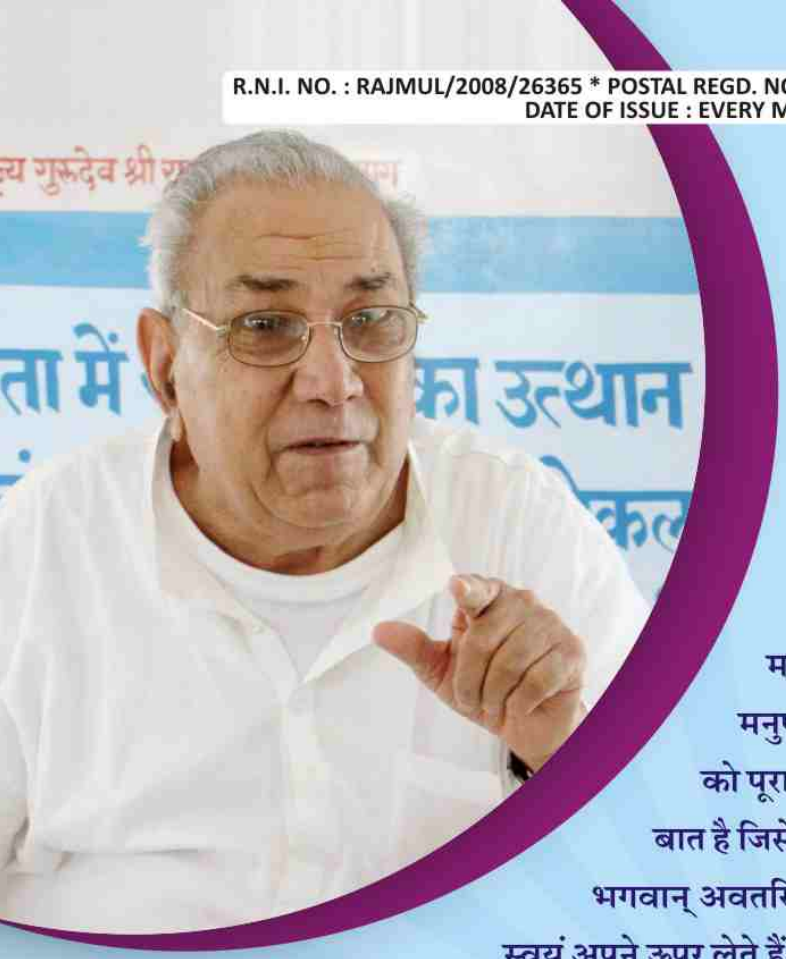

श्री अरविन्द अपने शिष्यों को पत्रों के माध्यम से पूछे गए प्रश्नों के जवाब देते थे। उन्हीं पत्रों में किसी ने सृष्टि में 'अवतार के उद्देश्य' विषय पर कोई प्रश्न पूछा तो श्री अरविन्द ने बड़ा ही सटीक जवाब लिखकर भेजा, उसका एक अंश-

सृष्टि के लिए "अवतार का उद्देश्य"

"भगवान् और मनुष्य के बारे में जो बात है, सो भी एक मन निर्मित कठिनाई है। भगवान् यहाँ मनुष्य में विद्यमान है, और मनुष्य अपनी उच्चतम अभीप्साओं (तीव्र इच्छाओं) और प्रवृत्तियों को पूरा कर और अतिक्रम (Encroach) कर भगवान् बन जाता है। यह बात है जिसे तुम्हारा अवसाद (Depression) समझ नहीं सका-यह बात कि भगवान् अवतरित होते हैं, वह मनुष्यता के बोझ को अतिक्रम करने के लिए उसे स्वयं अपने ऊपर लेते हैं-वह मानवता को यह दिखाने के लिये कि कैसे भगवान् बना जा सकता है, मनुष्य बन जाते हैं। परन्तु ऐसा तब तक नहीं हो सकता जब तक कि वह केवल एक दुर्बल व्यक्ति हो और उसके भीतर कोई दिव्य उपस्थिति या उसके पीछे कोई दिव्य शक्ति न हो-उसे उन सब लोगों में अपनी शक्ति भरने के लिये, जो उसे ग्रहण करने के लिये इच्छुक हो, शक्ति संपन्न होना ही होगा। इसलिये अवतार के अंदर दो तत्त्व विद्यमान रहते हैं-सामने "मनुष्य भाव", पीछे "भागवत भाव"-और यही वह चीज है जो अपरिमेयता (*Inexhaustibility*, जो अक्षम्य है, अक्षयता, असीमत्व, अपारता, जिसका कभी नाश नहीं होता) - की छाप उत्पन्न करती है जिसकी शिकायत तुमने की थी। यदि तुम केवल मनुष्य पर ही दृष्टि डालो, केवल बाहरी दृष्टि से ही देखो और अन्य कोई चीज देखने को इच्छुक या तैयार न होओ तो तुम केवल मनुष्य को ही देखोगे-यदि तुम भगवान् को वहाँ खोजो तो तुम भगवान् को पाओगे।"

संदर्भ-महर्षि श्री अरविन्द पत्र भाग-1, पृष्ठ-480-81

संपूर्ण मानवजाति के लिए एक संदेश

हिन्दू (सनातन) धर्म में दस अवतारों की अवधारणा है। प्रत्येक अवतार पृथ्वी पर मानव देह धारण कर, सृष्टि के क्रमविकास में सहायक होता है। हिन्दू दर्शन के अनुसार अभी तक नौ अवतार हो चुके हैं-भगवान् श्रीराम आठवें तथा श्रीकृष्ण नवें अवतार थे। संपूर्ण मानव जाति को दसवें अवतार कल्कि का इंतजार है। श्री अरविन्द के अनुसार कल्कि अवतार पृथ्वी पर हो चुका है और उन्होंने लिखा भी है कि -"वे ऐसी परिस्थितियाँ ला दें जिससे केवल "कल्कि" की तलवार ही पृथ्वी को एक उदण्ड आसुरी मानवता के भार से मुक्त कर सके। चुनाव स्वयं मानवजाति के ही हाथ में है; क्योंकि जैसा वह बोयेगी वैसा ही वह अपने कर्म का फल पायेगी।"

यदि अवतार विषयक पराज्ञान प्राप्त करना चाहते हो तो प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? -अपने आज्ञाचक्र पर सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में 'संजीवनी मंत्र' जप के साथ, इनके चित्र पर 15 मिनट ध्यान करके देखो !

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक - रामूराम चौधरी

www.the-comforter.org